कुछ खट्टा
कुछ मीठा

कुछ खट्टा कुछ मीठा

रचयिता

के.के. सिंह 'मयंक'

संकलन

सर्वत जमाल

नमन प्रकाशन, लखनऊ

प्रकाशक : नमन प्रकाशन,
चिन्टल्स हाउस, स्टेशन रोड,
लखनऊ। मो. 9415094950

रचयिता : के.के. सिंह 'मयंक'

संकलन : सर्वत जमाल

कृति–स्वाम्य : लेखकाधीन

संस्करण : 2015 ई.

मूल्य : 100.00 रुपये।

ISBN : 978-81-89763-20-6

साज–सज्जा : नवीन शुक्ल 'नवीन'

मुद्रक : नमन प्रकाशन,
चिन्टल्स हाउस, स्टेशन रोड,
लखनऊ। मो. 9415094950

समर्पण

उन सभी साहित्यकारों, मित्रों, परिजनों को
जिनके स्नेह ने मुझे 'मयंक' बनाया।

जनाब के.के. सिंह 'मयंक' किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। आपकी पिछली कृति 'दीवान-ए-मयंक' आपके बारे में सब कुछ कह देती है। यह कृति 'कुछ खट्टा कुछ मीठा' जिसका तेवर कुछ अलग सा है। आज के समय में जो फूहड़ हास्य देखने, सुनने वालों को परोसा जा रहा है, हम सभी उससे वाक़िफ़ है, लेकिन आप इस कृति को पढ़कर देखें और यक़ीनन आप यह मान जायेंगे कि मयंक जी ने अपनी बातें किस ख़ूबसूरती से कही हैं। इस कृति में उन्होंने शायद ही कोई बचा हो जिससे पंगा न लिया हो और पढ़ने के बाद शायद ही कोई मिले जिसके चेहरे पर मुस्कान न आये। यह मुश्किल कारनामा हर किसी के बस की बात नहीं। किसी शायर ने क्या खूब कहा है -

या तो दीवाना हंसे, या तू जिसे तौफ़ीक़ दे,
वर्ना इस दुनिया में आकर मुस्कुरा सकता है कौन ?

● प्रकाशक

''मैं भी मुंह में ज़बान रखता हूं''

कुछ ऊपर वाले की महिमा और कुछ सरस्वती की कृपा, नाचीज़ कोयला था मगर क़ीमत हीरे जैसी लगाई गई। कविता/शायरी का शौक़ मुझे शोहरत की बुलन्दियों पर ले गया। २५ पुस्तकें प्रकाशित हुईं, मुशायरों ने विश्वस्तरीय पहचान दी। ईश्वर और आप पाठकों का बेहद शुक्रगुज़ार हूं।

लेखन के क्षेत्र में हमेशा कुछ नया पेश करने की लालसा रही। उर्दू और हिन्दी में दीवान के प्रकाशन के बाद कुछ नया करने की तबीयत तो थी मगर नया क्या हो, तय करना मुश्किल था, इस संकट से उबारा मुझे मेरे दोस्त और दुःख दर्द के साथी 'सर्वत जमाल' ने। उनका मशवरा था कि ग़ज़लों में व्यंग्य और थोड़े हास्य का भी मिश्रण किया जाए और एक संग्रह ऐसी रचनाओं का भी पाठकों की ख़िदमत में पेश किया जाए।

बात मुझे भी जंची। फिर भी, मार्केट में, थोक भाव में जो हास्य-व्यंग्य बिक रहा है, उससे मुझे थोड़ी चिन्ता थी। सर्वत जमाल ने मेरी थोड़ी 'काउन्सिलिंग और 'कंडीशनिंग' की। उन्होंने मुझे सस्ते, भोंडे हास्य से बचने और थोड़े चुटीले व्यंग्य की राह अपनाने का मशवरा दिया। बस गाड़ी चल निकली और मेहनत का नतीजा किताब की शक्ल में आपके सामने है।

इस संग्रह की पहली पायदान पर मुझे इस बात का एहसास हो गया कि हास्य-व्यंग्य की रचना कठिन ही नहीं, लोहे के चने चबाने जैसा काम है। कई बार कापी बन्द कर के रख दी। कई बार क़लम

उठा रहा फेंका मगर सर्वत जमाल मेरा हौसला बढ़ाते रहे और पीठ थपथपाते रहे।

पिछले कुछ वर्षों से आंखों ने साथ लगभग छोड़ दिया है। लिखना तो तक़रीबन नामुमकिन हो गया है। अगर सर्वत जमाल ने वक़्त निकाल कर इन रचनाओं को क़लमबद्ध न किया होता तो शायद ....।

संग्रह आपके हाथ में है, मैं अपनी नई करवट में कैसा हूं, यह तो आप बताएंगे। आपकी प्रतिक्रिया की मुझे प्रतीक्षा है।

सादर,

के.के. सिंह 'मयंक'
'ग़ज़ल', 5/597, विकास खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ-226010
मो: 09415418569

अनुक्रमणिका

हां साहिबे-दीवान रहे 1
हुआ मंहगाई में गुम 2
जो भी पैदा धन 3
नौकरी में ठीक है ईमान 4
जब भी शैतान वरग़लाता है 5
हुस्न ने फेंके जाल बराबर 6
भाषण ये धुआंधार 7
सरकार कह रही थी 8
जो हमारी कमी बताते है 9
ज़ंजीर से बांधा गया 10
कहने को मैं भी हूं शौहर 11
या बस्ती के लोग 12
गोरी आए, काली आए 13
घर में बीवी ही नहीं 14
मैं ख़ुद अन्धा हूं 15
कैसे भागूं पांव में 16
असलहों का मजमा था 17
जो सच्चा है वो कट जाता है 18
धर्म अगर इनका उनका 19
दिमाग़ अपना बहुत 20
त्योहारों के जुलूस में 21
लोग ऐंठन में हैं 22
बदन हड्डी है पिचके गाल 23
तुम्हें देगा शासन 24
पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन 25
हम जो सच्ची बात 26
सयाना बंगला गाड़ी मांगता है 27
आवारा गर्द या कोई लोफ़र 28
भेड़िए हार मान बैठे हैं 29
अजब सा शहर 30
वो तो मालामाल होते 31
कीजिएगा अपने घर की नाप 32
बहुत से लोगों ने सच पर 33
अजीब क़िस्म का आलम 34
अब तो सूरज को भी 35
बताओ बेबसी का मोल 36
अपनी ख़राबियों का असर 37
देखके ऐसा लगता है 38
आये थे बस दो अदद 39
निरक्षर ज्ञान लेना 40
काले धन का क्या करूं 41
जब सभी पागल ग़ज़ल 42
कोई संकट नहीं 43
ये रिश्तेदार मेरे घर में 44
पड़ोसी रात दिन रोने 45
इस देश में कोई भी 46
रोशनी रंग कायनात में 47
हमारा प्यार वो स्वीकार 48
कहा ये किसने सुख़नवर 49
ज्योति आज़ादी की मन में 50
शराफ़त और मर्यादा 51
जब उसके हाथ का बेलन 52
एक सपना देखता हूं 53
पहाड़ों को लगी राई 54
हमेशा सुख नहीं मिलता 55
हमेशा झूठ को ताली 56
चांद उधर आसमान से निकला 57
हाथ ऊपर कीजिए 58
फटीचर और दरदर के भिखारी 59
हमें देश की जग हंसाई 60

इश्क़ का इम्तहान 61
वोटर मुस्लिम, वोटर हिन्दू 62
मियां मजनूं का हो सकता 63
हर एक इल्म सयाना 64
इतना ऊंचा मक़ाम 65
दुश्मन खड़े हैं हाथों में 66
इससे पहले आए आफ़त 67
धन वालों के यार बहुत हैं 68
शहर में कौन आने वाला है 69
अब भी पड़ा हुआ हूं 70
ऐ काश हमारे ख़्वाबों में 71
सबके सब बेदाम पड़े 72
हां बेईमानी तो होगी 73
मिड डे मील का मतलब 74
रंज पर, दर्द पर, ख़ुशी पर 75
पूजा में हमने पाए हैं 76
बांदियों से भी चाह 77
नेता दुनिया छोड़ देगा 78
देखिए दावों की भाषा 79
दुआ करो कि 80
किस क़दर भोले है शंकर 81
बीवी मिली तो सबकी 82
बहू के लहजे की काट 83
समय का आज तक़ाज़ा 84
किसी हसीना को 85
कैसी भिक्षा कैसा कमंडल 86
पत्नी जब देती है श्राप 87
जो साली के आ जाने से 88
शरीफ़ इन्सान हूं घर में 89
ज़ालिम है मगर ख़ून 90
पलट कर देखता हूं 91
सामने वाली घर में तो 92
किसको हीरा, सोना, चांदी 93
हम पकौड़ा, समोसा खा लेंगे 94
मयस्सर तो नहीं मैदे 95
चोरों पर कब अपना रोब 96
फ़लक पर एक धुंधला 97
इन्सान तो इस युग में 98
हमारे देश को मेहनत मशक़्क़त 99
ससुर और सास घर में 100
अकेले में तो आंखों की 101
एड़ियों में मैल इतना 102
उन्हें पूजा को दिखते हैं 103
बुर्ज़ुवा हूं, कोई 104
बताओ कौन अंगूठा 105
अब काम पड़ा तो 106
हर बराती हो गया 107
कोई फल पाता है 108
अरबों ख़र्चे गए 109
सादा जीवन, उच्च विचार 110
ग़रीबी में नगीना देखकर 111
कौन कहता है प्यार से 112
सैलाब और कम हुआ 113
दुआ है, चारा बनें, ... 114
औरत के मुंह में जीभ 115
जब से हुए हैं दानी चुप 116
दिखाने के लिए औक़ात 117
बहुत से लोग मेरी 118
ढूंढिए, हैं भक्त भी 119
तेरे ही जैसा है पागल 120
शाही मटन की प्लेट 121
भयानक हुस्न के चेहरे 122
चुभेगा तुमको भी पत्नी का 123
जैसे तैसे कटता है 124

हां साहिबे-दीवान रहे, मीर हम भी
बीवी से परेशान रहे, मीर भी हम भी

कोठे थे, तमाशे थे, शराबें थीं पर अफ़सोस
इन चीज़ों से अनजान रहे मीर भी हम भी

मस्जिद, न मज़ारें, न इबादत, न ही तक़वा
हालांकि मुसलमान रहे मीर भी हम भी

औरों की तरह क्यों न हसीनों ने सराहा
इस दर्द से हलकान रहे मीर भी हम भी

ग़ज़लों के अखाड़े में कोई कर न सका चित
ग़ज़लों के पहलवान रहे मीर भी हम भी

पैसे की कमी और ग़रीबी रही ता उम्र
बस, ग़ज़लों के सुल्तान रहे, मीर भी हम भी

भेद अपना 'मयंक' कोई समझ ही नहीं पाया
उस क़िस्म के इन्सान रहे मीर भी हम भी

हुआ मंहगाई में गुम पाउडर, लाली नहीं मिलती
तभी तो मुझसे हंस कर मेरी घरवाली नहीं मिलती

ये बीवी की ही साज़िश है कि जब ससुराल जाता हूं
गले साला तो मिलता है मगर साली नहीं मिलती

जवानी में दुल्हन गोरी मिले, ले जाइए फ़ौरन
बुढ़ापे में मियां गोरी तो क्या काली नहीं मिलती

सभी बीवी से घर के खाने की तारीफ़ करते हैं
कोई भी मेज़ होटल में मगर ख़ाली नहीं मिलती

मटन-मुर्ग़ा, कलेजी, क़ोरमा अब भूल ही जाएं
कि सौ रुपये में वेजीटेरियन थाली नहीं मिलती

म्युनिसपिल्टी ने हम रिन्दों पे कितना ज़ुल्म ढाया है
कि गिरने के लिए ओपन कोई नाली नहीं मिलती

'मयंक' स्टेज पर गीत और ग़ज़ल अब कौन सुनता है
न हों रचनाओं में गर चुटकले, ताली नहीं मिलती

जो भी पैदा धन काला कर सकता है
ओल्ड फ़ियेट को इम्पाला कर सकता है

चोरों के भी घर में डाका डाल सके
ये हिम्मत वर्दी वाला कर सकता है

नेता और अफ़सर हों जिसकी जेबों में
वो जब चाहे घोटाला कर सकता है

नेता को ले ले ले ले से क्या मतलब
वो तो केवल ला ला ला कर सकता है

पैंट सूट जो कर न सकें उसको कुर्ता
खद्दर का ढीला ढाला कर सकता है

मंत्राणी पट जाएं तो काम असम्भव को
संभव मंत्री का साला कर सकता है

मंत्री जी तक जो हिस्सा पहुंचाए 'मयंक'
काम वही अफ़सर आला कर सकता है

नौकरी में ठीक है ईमान होना चाहिए
ऊपरी इन्कम का भी कुछ ध्यान होना चाहिए

मैं तो शिद्दत के सबब बैठा था रस्ते में मगर
लोग कहते हैं मेरा चालान होना चाहिए

शेर से पंजा लड़ाकर मैं पटक दूंगा उसे
शर्त ये है शेर को बेजान होना चाहिए

अब नया क़ानून है जनता रहेगी तंगहाल
देश के नेताओं को धनवान होना चाहिए

काम बाबूजी करेंगे क्यों न चुटकी में मेरा
हां मगर ऑफ़र उन्हें जलपान होना चाहिए

संत हो जाए अगर तो हुस्न की तौहीन है
आदमी को फ़ितरन शैतान होना चाहिए

मर्द की मर्दों से शादी हो रही है तो 'मयंक'
छोड़ो कन्यादान, बालक दान होना चाहिए

जब भी शैतान वरग़लाता है
आदमी ब्याह तब रचाता है

वो ही शौहर है कामयाब कि जो
रोज़ बीवी की डांट खाता है

शादी की वर्षगांठ पर शौहर
हादसे की ख़ुशी मनाता है

ख़ौफ़ है मुझको सिर्फ़ बीवी से
मौत से कौन ख़ौफ़ खाता है

दिन चुनावों के आ गए शायद
वरना कब नेता गिड़गिड़ाता है

बीवी खुश है वो जिसका शौहर रोज़
खाना होटल से लेके आता है

आज शायर अज़ीम वो है 'मयंक'
शेर कहता नहीं है, गाता है

हुस्न ने फेंके जाल बराबर
बच निकले हम बाल बराबर

रात पुलिस ने किया बरामद
सुबह को सारा माल बराबर

आप गोश्त की खान हैं भाई
हम क्या हैं कंकाल बराबर

कुर्सी, वोट और माल मिले तो
यू०पी० और बंगाल बराबर

रिश्वत के खोखे न मिलें तो
बंगला भी घुड़साल बराबर

हम से पूछो बीवी क्या है
घर की मुर्ग़ी दाल बराबर

बीवी 'मयंक' जो प्यार से देखे
वो लम्हा सौ साल बराबर

भाषण ये धुआंधार हमारे न तुम्हारे
वादों के ये भंडार हमारे न तुम्हारे

नेताओं का किरदार फ़क़त इतना समझ लो
ये लोग वफ़ादार हमारे न तुम्हारे

कल तुमने पढ़े, आज इन्हें मैं भी पढूंगा
उस्ताद के अशआर हमारे न तुम्हारे

गुंडो से, दबंगों से छना करती है इनकी
दारोग़ा, हवलदार हमारे न तुम्हारे

फुटपाथ से, ठेलों से ख़रीदा करो हर चीज़
यह मॉल, ये बाज़ार हमारे न तुम्हारे

समझो न इन्हें अपना वफ़दार कभी तुम
रिश्वत के तलबगार हमारे न तुम्हारे

दंगों में 'मयंक' आ ही गया नाम हमारा
पकड़े गए हथियार हमारे न तुम्हारे।

सरकार कह रही थी कि दंगा नहीं हुआ
जो मर चुके थे उनको अचम्भा नहीं हुआ

पीटा, घसीटा, मारा गया मैं हज़ार बार
मुझको ज़लील कर दे, वो पैदा नहीं हुआ

वो मुझको जानती नहीं पर मुझको फ़ख्र है
कैटरीना कैफ़ से मेरा रिश्ता नहीं हुआ

फिर उसका प्यार भूलना अच्छा लगा मुझे
मेरा इरादा पूरा था, उसका नहीं हुआ

तावीज़, गन्डे, भस्म भी बेकार हो गए
अठ्ठारह बेटियों पे भी बेटा नहीं हुआ

औरत नज़र जो आई तो ऐसा लगा मुझे
जैसे जहान में कोई बूढ़ा नहीं हुआ

बोलो 'मयंक' अबके ग़रीबी मिटेगी क्या
पिछले बरस तो कोई अजूबा नहीं हुआ

जो हमारी कमी बताते हैं
हम उन्हें मुंह नहीं लगाते हैं

रोज़ वो मुंह पे थूक देती है
और हम रोज़ मुंह की खाते हैं

कंठ में जिनके क़ब्ज़ होता है
बात करने में वो लजाते हैं

यह जो चमचे हैं, आएंगे बेशक
ये तो घुटनों के बल भी आते हैं

धर्म, ईमान, एकता, साहस
आइए, क़हक़हा लगाते हैं

यान मंगल पहुंच गया और हम
शान से झोंपड़ा सजाते हैं

क्या कोई साथ अपना देगा 'मयंक'
हम नया इन्डिया बनाते हैं

ज़ंजीर से बांधा गया बेकार का कुत्ता
जो घर को चलाए वही परिवार का कुत्ता

अकड़ी हुई रखता है ज़मींदार का कुत्ता
और पूंछ हिलाता है वफ़दार का कुत्ता

बिस्किट कभी हड्डी तो कभी दूध का तोहफ़ा
सरकार से बढ़ कर हुआ सरकार का कुत्ता

कुदरत ने सजा रक्खी थी इतनी बड़ी दुनिया
इन्सान मगर हो गया बाज़ार का कुत्ता

घर बैठे बरी होना था उसको, वो हुआ भी
इस शान से जीता है असरदार का कुत्ता

आता है तो सब पूंछ हिलाते है, ख़ुशी से
और बाद में सब कहते हैं, दरबार का कुत्ता

इंसान की फ़ितरत का असर मुझ में है, देखो
मैं भी हूँ 'मंयक' अपने ख़रीदार का कुत्ता

कहने को मैं भी हूं शौहर बीवी का
लेकिन चपरासी हूं अफ़सर बीवी का

ग़ुस्से में वो गला दबाती है और मैं
पांव दबा देता हूं अकसर बीवी का

मेरी बीवी कोई मदारी नहीं मगर
सब कहते हैं मुझको बंदर बीवी का

कालोनी की हर औरत यह कहती है
किस कारण से मुझको नौकर बीवी का

बीस अदद कमरे हैं, मैं दालान में हूं
मेरे घर में बसा है पीहर बीवी का

बाहर सुन्दर चेहरे देखता रहता हूं
डर बैठा रहता है अन्दर बीवी का

अब के करवा चौथ पे वो मुझसे बोली
तू 'मयंक' बस तू है ज़ेवर बीवी का

या बस्ती के लोग ज़रा शर्मीले हैं
या फिर उसके होंठ बहुत ज़हरीले हैं

डाकुओं को ललकार रहे है गांव के लोग
लेकिन पाजामे क्यों सबके गीले हैं

खद्दरधारी चढ़ दौड़े हैं थाने पर
अब वर्दी वालों के तेवर ढीले हैं

भेंट चढ़ी तो ऐसा पिघले जैसे मोम
सब कहते थे, मंत्री जी पथरीले हैं

सावधान, शिव की पूजा करने वालो
असुरों के भी कंठ आजकल नीले हैं

मेहनत से पाया है सेनापति का पद
बरसों हमने आलू बैंगन छीले हैं

दो बापू, दोनों गुजराती, दोनों संत
इक 'मयंक' थे सादे, इक चमकीले हैं

गोरी आए, काली आए
कैसी भी घरवाली आए

जन्म दिवस पर भीड़ बहुत थी
सारे डब्बे ख़ाली आए

उसकी पुलिस सेवा है पक्की
जिसको दो सौ गाली आए

आज दुशासन दम है तुझमें
बोल कहां पंचाली आए

बैंक लूट कर नाचूं क्या मैं
सारे नोट तो जाली आए

तुमको पता है उपवासों की
दस हजार में थाली आए

काले धन-मन हैं 'मयंक' जब
फिर कैसे हरियाली आए

घर में बीवी ही नहीं रहती, मेरी सास भी है
यूं समझिए कि मेरा घर मेरा वनवास भी है

मेरी ससुराल में रहती है मेरी सास की मां
मुझको लगता है ये ससुराल का इतिहास भी है

एक घुड़की में सभी गीली करेंगे पतलून
क्या किसी शख़्स को इस बात का एहसास भी है

दो महीने का पलस्तर है बदन पर मेरे
मैं ने पत्नी से कहा था, चलो मधुमास भी है

क्रोध में खाना बने या न बने, मुझको क्या
आज के दिन ये सुना है कोई उपवास भी है

एक सरकार गिरी, आए सड़क पर नेता
सबके चेहरों पे चमक बिखरी है, उल्लास भी है

मुझको बेलन से 'मयंक' उसने धुना है लेकिन
इस पिटाई का मुझे वर्षों से अभ्यास भी है

मैं ख़ुद अन्धा हूं चश्मे बेचता हूं
नज़र वालो को सुरमे बेचता हूं

ख़रीदारों की गिनती पूछिए मत
अदब वालों को लहजे बेचता हूं

सड़क पर हूं तो आवारा न समझो
गली में शाही टुकड़े बेचता हूं

मुझे सब माफ़िया पहचानते हैं
हमेशा खोटे सिक्के बेचता हूं

मेडल मिलते हैं मुझको मुफ़्त हर दिन
जिन्हें मैं ले के पैसे, बेचता हूं

शरीफ़ इंसान भी हैं पास मेरे
उन्हें बस जैसे तैसे बेचता हूं

इन्हीं से नाम, शोहरत, धन कमाया
'मयंक' अब सिर्फ़ चमचे बेचता हूं

कैसे भागूं पांव में छाले निकले हैं
मेरी खोज में वर्दी वाले निकले हैं

पर्यावरण दफ़्तर में सफ़ाई का अभियान
सौ क्विन्टल मकड़ी के जाले निकले हैं

डान माफ़िया ज़िन्दा था तो चुप थे सब
आज सभी के मुंह से ताले निकले हैं

लव जिहाद तो मुग़ल काल से क़ायम था
इतनी सदियों बाद घोटाले निकले हैं

क़त्ल करो, लाशों की चिन्ता, छोड़ो भी
नदियां हैं, तालाब हैं, नाले निकले हैं

लोकतंत्र की रक्षा में एसी कारें
सड़कों पर सुविधा के पाले निकले हैं

कट्टा, ए.के. छप्पन छोड़ के आज 'मयंक'
शान्ति सभा में वर्दी वाले निकले हैं

असलहों का मजमा था, उस तरफ़ निहत्थे चोर
चार थानों की वर्दी आई थी भगाने चोर

रेल हादसे वाली चन्द लाशें आई हैं
अफ़सरों ने फ़रमाया लग गए ठिकाने चोर

सामने के होटल से नाश्ता मंगाया है
वर्दियां बहुत ख़ुश हैं, आए हैं कमा के चोर

चुप चुपाते आते हैं रोज़ी-रोटी की ख़ातिर
चुप चुपाते जाते हैं, क्यों करें धमाके चोर

ऐसे ऐसे चेहरे हैं, सुनके कांप जाओगे
तुम जिन्हें बताते हो बे अदब, लफ़ंगे, चोर

पूछिए किसी से भी, आज देश में अपने
हर कोई ये कहता है, लीडरों से अच्छे चोर

अब 'मयंक' बतलाओ इस वतन का क्या होगा
आ गए है संसद में आज हंसते गाते चोर

जो सच्चा है वो कट जाता है नोटों की कटारी से
कि जैसे बोरा फट जाता है भारी रेज़गारी से

सभी कहते हैं बाहर आएगा और काम आएगा
कभी वो काला धन बाहर तो निकले आलमारी से

किसी का दिल बदल जाना, किसी का दल बदल जाना
ये मामूली से करतब क्यों नहीं होते मदारी से

कोई असली अगर है तो उसे नक़ली ही काटेगा
कभी हीरा नहीं कटता किसी लोहे की आरी से

बड़े देशों ने भी मांगी मदद कुछ छोटे देशों से
कटोरा मांग कर हम लोग ले आए भिखारी से

वो जब आया तो अपनी बात उसने हम से मनवा ली
कभी हम ना नहीं कह पाए लक्ष्मी की सवारी से

'मयंक' अब आप का कुंबा नवाबों के नगर में है
ज़रा पीछा छुड़ाएं आप अपनी ख़ाकसारी से

धर्म अगर इनका उनका हो जाएगा
पण्डितपुर दक्खिन टोला जाएगा

बीस क़त्ल, सौ घायल हैं तो होने दो
कल थाने में समझौता हो जाएगा

राम राज्य ऐसा होता है तो इक दिन
रावण ही अपना राजा हो जाएगा

आगे चल कर कुर्सी मिलनी है उसको
जो चमचों का भी चमचा हो जाएगा

बच्चा बच्चा पैसों का है भक्त, तो क्या
हर बच्चा रंगा-बिल्ला हो जाएगा

हम इंसानों से तो बन्दर बेहतर हैं
मर जाएंगे तो चन्दा हो जायेगा

आप 'मयंक' ईमान बचाएंगे कब तक
इक दिन इसका भी सौदा हो जाएगा

दिमाग़ अपना बहुत भन्ना रहा है
पड़ोसी मुर्ग़ कैसे खा रहा है

कोई महबूबा से मिलने गया था
पिटाई हो गई तो जा रहा है।

निहत्था है एम एल ए का भतीजा
पुलिस का महकमा थर्रा रहा है

भरी है रेल बेटिकटों से सारी
टिकटधारी उधर घिघिया रहा है

उसे मैं कैसे कह दूं आई लव यू
चचा मुझको पसीना आ रहा है

किसी ने थाल में सिक्के न डाले
पुजारी देर तक रोता रहा है

'मयंक' आओ मेरे खेतों में रो लो
यहां हर खेत में सूखा रहा है

त्योहारों के जुलूस में इन्सान कट गए
धर्म और अहिंसा दोनों के मानी उलट गए

पीज़ा, बटर चिकन तो कभी शाही कोफ़्ते
जानां तुम्हारा प्यार से अब हम उचट गए

सरहद पे जान जाने का खतरा था, इसलिए
भाग आए हम भी और मुहब्बत पे डट गए

पर्यावरण की फ़िक्र थी, गंगा न मैली हो
कुछ लोग नित्य कर्म को सागर के तट गए

अब प्लाट बिक रहे हैं, जहां खाई थी कभी
कूड़े के ढेर से सभी गड्ढे वो पट गए

फिर माफ़िया ने जंग का एलान कर दिया
नेताजी फिर बयान से अपने पलट गए

बेगम को आज सुबह बताई थी उनकी उम्र
सर फट गया 'मयंक', ये कपड़े भी फट गए

लोग ऐंठन में हैं रस्सी की तरह
हम ज़रा सीधे जलेबी की तरह

झूठ तो इक रेशमी एहसास है
सत्यता लगती है गोली की तरह

कोई लड़की लिफ़्ट देती ही नहीं
किसके पीछे घूमूं चक्की की तरह

प्रेमिका वेलन्टाइन डे पर लाई क्यों
रेशमी ब्रेसलेट, राखी की तरह

उसको ख़ुश रखने में इतनी भाग दौड़
प्यार लगता है कबड्डी की तरह

तीन दिन की भूख का आलम न पूछ
चांद भी लगता है रोटी की तरह

रोशनी उनकी है एल ई डी 'मयंक'
और तुम हो मोमबत्ती की तरह

बदन हड्डी है पिचके गाल देखो
मेरा महबूब है कंकाल देखो

बताता है वो अपनी उम्र बत्तीस
भरी है झुर्रियों से खाल देखो

सड़क पर इश्क़ से मिलता है क्या-क्या
हमें देखो, हमारा हाल देखो

गवर्नर था, गया थाने में लेकिन
गली फिर भी न उसकी दाल, देखो

मुहब्बत की सज़ा मुझको मिली है
मेरे मूंडे गए हैं बाल, देखो

चचा को भी जवानी चढ़ गई थी
लहू से हो गए हैं लाल देखो

नहीं काम आएं जब रिश्ते लहू के
'मयंक' अपने लिए ससुराल देखो

तुम्हें देगा शासन तबाही के पैसे
हमें कौन देगा गवाही के पैसे

मुझे कल हुई थी पकौड़ों की ख़्वाहिश
तो बेगम ये बोलीं, कहाड़ी के पैसे

हुई घर में चोरी, सफ़ाया हुआ है
दिए जैसे तैसे सिपाही के पैसे

बरी हो गया है वो चालाक क़ातिल
उसे मिल गए बेगुनाही के पैसे

रतौंधी से देखा नहीं डाकुओं को
मुझे दे गए कम निगाही के पैसे

तेरा नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखूंगा
अभी मुझको दे दे सियाही के पैसे

'मयंक' आप ने पढ़के पाया है पैसा
मुझे भी मिले वाह वाही के पैसे

पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन
कौन दिशा में जाएं लेकिन

बिना बैटरी का मोबाइल
हम भी ऐसे हैं तेरे बिन

अच्छे दिन आने वाले हैं
क्या बोतल से निकलेगा जिन

सस्ते शेड की बात न सोचो
सोने से भी मंहगी है टिन

टीवी देखके मंत्री बोले
हुदहुद से अच्छा था फ़ेलिन

साठ बरस के मुखिया जी फिर
ले आए हैं दुल्हन कमसिन

दाग़ 'मयंक' मिटाने होंगे
लेकर आओ निरमा या रिन

हम जो सच्ची बात बतियाने लगे
अपने बच्चे हमको गरियाने लगे

माफ़िया से शहर यूं भी तंग है
अब पुलिस वाले भी घिघियाने लगे

हादसे के दिन मददगारों का हाल
लोग पहले माल गंठियाने लगे

आए हाकिम भी गवाही के लिए
हम भी इक दूजे को धकियाने लगे

संत जी ने प्रवचन में क्या कहा
भक्त क्रोधित हो के लतियाने लगे

एक हिजड़े की कमाई देखकर
लोग नाहक़ उस पे रिसियाने लगे

देश की सेवा करेंगे आप भी
क्यों 'मयंक' अब आप सठियाने लगे

सयाना बंगला गाड़ी मांगता है
मगर पैसे अनाड़ी मांगता है

नई चीज़ों का चस्का है इसे भी
नई दुल्हन कबाड़ी मांगता है

नशे में धुत हैं सारे गांव वाले
यहां बच्चा भी ताड़ी मांगता है

भिखारी है कि तू मज़दूर कोई
बिना मेहनत दिहाड़ी मांगता है

भला यू०एस० ने कब ईरान मांगा
वो बस फ़ारस की खाड़ी मांगता है

मिलेगी, नौकरी तुमको मिलेगी
ज़रा मोहलत जुगाड़ी मांगता है

'मयंक' अम्पायर अपने, फ़ील्ड अपनी
दुआ अब हर खिलाड़ी मांगता है

आवारा गर्द या कोई लोफ़र नहीं हूं मैं
नेता हूं, कोई फ़िल्म का जोकर नहीं हूं मैं

लंगूर बोली बीवी तो मैंने भी कह दिया
अच्छा हुआ कि हूर का शौहर नहीं हूं मैं

कल मेरी गर्ल फ्रेन्ड ने मुझसे किया मज़ाक़
झल्ला के मैंने भी कहा, देवर नहीं हूं मैं

सीढ़ी पे चढ़ के इश्क़ में गिरने का ख़ौफ़ है
अफ़सोस उसके क़द के बराबर नहीं हूं मैं

दस दिन की बासी दाल पे कहना पड़ा मुझे
यह ज़हर कौन खाएगा, शंकर नहीं हूं मैं

बेटे से कल कहा जो किसी काम के लिये
बोला किसी के बाप का नौकर नहीं हूं मैं

ठग, जालसाज़, चोर कहें आप कुछ मुझे
लेकिन 'मयंक' आपसे ऊपर नहीं हूं मैं

भेड़िए हार मान बैठे हैं
मेमने सावधान बैठे हैं

शोर मचने लगा हवेली में
जबकि हम बेज़बान बैठे हैं

गांव में आ रहे हैं बुलडोज़र
रास्तों पर किसान बैठे हैं

या तो इस पार होगा या उस पार
लोग इस बार ठान बैठे हैं

एन.जी.ओ. वाले कार में आए
कोई तो देगा दान, बैठे हैं

अपना अधिकार ही नहीं मिलता
ले के हम संविधान बैठे हैं

अपने हालात जानवर से 'मयंक'
आदमी के समान बैठे हैं

अजब सा शहर का दस्तूर क्यों है
जो शीशा है वो चकनाचूर क्यों है

मसीहा आप मुफ़लिस के हैं तो फिर
ग़िज़ा में आप की अंगूर क्यों है

पुराने पर नहीं बोलेंगे हम कुछ
नया हर ज़ख़्म भी नासूर क्यों है

हमारी शक्ल है जब आदमी की
हमीं से आदमीयत दूर क्यों है

वही राजा रहेंगे, हम रियाआ
हमें यह फ़ैसला मंज़ूर क्यों है

मुझे लगता है शोले उठ रहे हैं
मेरी बस्ती में इतना नूर क्यों है

हुआ शैतानियत का राज क़ायम
'मयंक' इन्सानियत मजबूर क्यों है

वो तो मालामाल होते जाएंगे
और हम कंकाल होते जाएंगे

प्रश्न का हल चाहिए हमको अभी
वरना हम वेताल होते जाएंगे

इनको सुलझाओ नहीं तो मसअले
जान का जंजाल होते जाएंगे

नीतियां ऐसी बनी हैं देश में
सब के सब कंगाल होते जाएंगे

गर यूं ही मौसम का बदलेगा मिज़ाज
हम सभी बदहाल होते जाएंगे

व्यक्ति पूजा बढ़ गई तो आप हम
आरती के थाल होते जाएंगे

शांत सी लगती है यह धरती 'मयंक'
देखना भूचाल होते जाएंगे

कीजिएगा अपने घर की नाप बटवारे के बाद
देखिएगा अपना आंगन आप बटवारे के बाद

सारे कमरे बेटों-बहुओं के हवाले कर दिए
आ गया दालान में फिर बाप, बटवारे के बाद

इस से पहले धर्म पर इनकी नहीं थी आस्था
कर रहे हैं लोग प्रभु का जाप बटवारे के बाद

प्रेम की शीतल फुहारों में नहाते थे सभी
बढ़ रहा है भाइयों में ताप बटवारे के बाद

लोग पंचायत में आख़िर आए हैं अब किस लिए
फ़ैसला कैसे करेगा खाप बटवारे के बाद

एक ने तय कर लिया, वह शहर में बस जाएगा
अपना हिस्सा बेचकर चुपचाप, बटवारे के बाद

एक घर में शोक का माहौल छाया है 'मयंक'
एक घर में ढोलकों की थाप बटवारे के बाद

बहुत से लोगों ने सच पर भी चल के देखा है
हम ऐसे लोगों ने पत्थर निगल के देखा है

ग़ुलाम क़ौम, तुझे रास आ गया पिंजरा
तेरे लहू ने भला कब उबल के देखा है

किसान आ गए लेकर बग़ावती तेवर
कहां किसी ने महल से निकल के देखा है

उजाला बांटना मंहगा ही पड़ता है मुझको
मैं अफ़ताब हूं, मैंने तो जल के देखा है

तमाम चेहरे इसी पर लगाते हैं इल्ज़ाम
बताओ आइना किसने बदल के देखा है

शिकायतें लिए बैठे हो क्यों ज़माने की
इसी जहान में हमने भी पल के देखा है

ये आसमान हवा में उछालता है हमें
'मयंक' हम भी गिरे हैं, संभल के देखा है

अजीब क़िस्म का आलम था सारी बस्ती में
कि रात जाग के सबने गुज़ारी बस्ती में

हमें ये लगता है दिन आ गए चुनावों के
दिखाई देने लगे हैं शिकारी बस्ती में

कुंए से कोई भी पानी निकाल सकता है
ये हादसा तो नया है तुम्हारी बस्ती में

तमाम लोग हैं सर और नज़र झुकाए हुए
गुज़रने वाली है शाही सवारी बस्ती में

बदल रहा है यहां रोज़ गांव का माहौल
मुझे पता है, छुपे हैं मदारी बस्ती में

यहां न बिजली, न पानी, न रास्ते, न पनाह
हुज़ूर आप न आएं हमारी बस्ती में

'मयंक' पहले तो हल्दी ही बांटी जाती थी
सुना है अब के बंटी है सुपारी बस्ती में

अब तो सूरज को भी जलते हुए डर लगता है
धूप की शक्ल पिघलते हुए डर लगता है

इतना दशहत भरा माहौल है इस दुनिया का
गिर गया हूं तो संभालते हुए डर लगता है

ख़ौफ़ लुटने का, कहीं जान चली जाने का
कोई भी रस्ता हो, चलते हुए डर लगता है

पार्क वीरान हैं, नदियों के किनारे सुनसान
लोग कहते हैं, टहलते हुए डर लगता है

प्यार लोगों में कहां, फैल चुकी है नफ़रत
अपने घर गांव में पलते हुए डर लगता है

ख़ून तो अब भी इकट्ठा है रगों में सब की
ख़ून को आज उबलते हुए डर लगता है

दुनिया बदली है मगर हम नहीं बदले है 'मयंक'
अब हमें ख़ुद को बदलते हुए डर लगता है

बताओ बेबसी का मोल क्या है
हमारी ज़िन्दगी का मोल क्या है

अभी तो चल रही है मेरी सांसें
अभी संजीदगी का मोल क्या है

ज़मीं पर क़द्रो क़ीमत है यक़ीकन
फ़लक पर चांदनी का मोल क्या है

किसी की भी नहीं है कोई क़ीमत
परखिए आप ही का मोल क्या है

अमीरी शुद्ध सोने सी है लेकिन
यहां पर मुफ़लिसी का मोल क्या है

दुशासन रोज़ साबित कर रहे हैं
सभा में द्रौपद्री का मोल क्या है

पुराने दौर में थी क़द्र इस की
'मयंक' अब शायरी का मोल क्या है

अपनी ख़राबियों का असर कौन देखेगा
रोज़ाना रात जैसी सहर कौन देखेगा

बस्ती में सारे लोग ही पहरा लगाएंगे
मेरा सवाल यह है किधर कौन देखेगा

दुख मौत का नहीं है मगर सब हैं फ़िक्रमन्द
बापू तो जा चुके हैं ये घर कौन देखेगा

यह सोच कर ही ख़्वाबों से पीछा छुड़ाया है
वीरान, उजड़ा उजड़ा नगर कौन देखेगा

कोई अजूबा, कोई करिशमा दिखाओ मत
लोगों की बुझ गई है नज़र, कौन देखेगा

तन्हा तुम्हीं हो भीड़ में सच्चाइयों के साथ
इस अंजुमन में तुम को मगर कौन देखेगा

ग़ालिब न मीर, फ़ैज़ न इक़बाल हैं 'मयंक'
अब तेरी शायरी का हुनर कौन देखेगा

देखके ऐसा लगता है ये मुर्ग़ी ख़ाना है
शिक्षा के मन्दिर में मेरा आना जाना है

भीष्म पितामह जैसे नेता, सिट्टी पिट्टी गुम
आज शिखण्डी को शायद हथियार उठाना है

फूट चुकी हैं उसकी दोनों ही आंखें कब की
अन्धे सोच के बेहद ख़ुश हैं राजा काना है

कवि सम्मेलन में दो दर्जन हम जैसे ही हैं
जोड़ तोड़ से घुस कर कविता हमें सुनाना है

शहर जला दो, कुर्सी ले लो आया है आदेश
हाथ सुरक्षित रखकर हमको आग लगाना है

आसानी से लग जाएगी दारू की भट्टी
पांच एकड़ में मंत्री जी का ताड़ीख़ाना है

अस्पताल में कमरा ले ले, गर 'मयंक' तुझको
पहलवान की घर वाली से नैन लड़ाना है

आये थे बस दो अदद हथियारबंद
और फिर हो ही गया दरबार बंद

भैंस मंत्री जी की चोरी हो गई
देखना हो जाएंगे दो चार बंद

एक नेता की गिरफ़्तारी हुई
देखते ही देखते बाज़ार बंद

यह अजंता और एलोरा की गुफा
बोलिए कैसे करें हम प्यार बंद

अफ़सरों ने दूर तक धक्का दिया
माफ़िया की हो गई थी कार बंद

आप थोड़ी चापलूसी सीखिए
हो रहे हैं इन दिनों ख़ुद्दार बंद

हथकड़ी झूठा कभी पहने 'मयंक'
सिर्फ सच्चे होंगे कितनी बार बंद

निरक्षर ज्ञान लेना चाहते हैं
तो गुरुजन दान लेना चाहते हैं

हम अत्याचार की जड़ काट देंगे
ससुर की जान लेना चाहते हैं

नगर में इक निराली रूपसी का
सभी संज्ञान लेना चाहते हैं

पड़ी कमज़ोर स्वामी जी की भाषा
ज़रा जलपान लेना चाहते हैं

हमारी बात में पैसा है, दम है
विरोधी मान लेना चाहते हैं

महामूरख की पदवी इस वतन में,
कई विद्वान लेना चाहते हैं

'मयंक' अपना वतन पहले संभालें
जो हिन्दुस्तान लेना चाहते हैं

काले धन का क्या करूं, मैं तस्करी का क्या करूं
नेक बन्दा बन तो जाऊं, मुफ़लिसी का क्या करूं

अनगिनत उपहार आए समधियाने से मेरे
मुझको यह बतलाओ मैं सौ मन दही का क्या करूं

चीख़ती है जब तो मेरे सूखने लगते हैं प्राण
शेर सी बीवी के आगे बुज़दिली का क्या करूं

सूचना अब आई है मेहमान शाकाहारी हैं
थोक में पकती हुई अन्डा करी का क्या करूं

मैं भी लेकर आ गया तबला, नगाड़ा और गिटार
पागलों के शहर में संजीदगी का क्या करूं

दान में आया है लेकिन कोई खाता ही नहीं
अब यही चिन्ता है मुझको, शुद्ध घी का क्या करूं

चीर बढ़ती जा रही थी कृष्णा महिमा से 'मयंक'
जल के दुःशासन ये बोला द्रौपदी का क्या करूं

जब सभी पागल ग़ज़ल कहने लगे
सब उन्हें प्रश्नों का हल कहने लगे

यह रियल इस्टेट वाले ख़ूब हैं
झोंपड़ी को भी महल कहने लगे

एक दिन क़ानून पारित हो गया
हम भी गुड़हल को कमल कहने लगे

बस यही उपलब्ध था, पीना पड़ा
आंसुओं को लोग जल कहने लगे

जेब से पैसे निकालो तो सही
तुम सफल हो, सब सफल कहने लगे

वक़्त पर हर काम पूरा होगा अब
आज को सरकार कल कहने लगे

इसकी क़ीमत बढ़ गई इतनी 'मयंक'
हम टमाटर को भी फल कहने लगे

कोई संकट नहीं, तनाव नहीं
उनके चमचों में भेद भाव नहीं

एक चड्डी है जायदाद मेरी
अपनी फ़ितरत में रख रखाव नहीं

मांग कर जो मिले, वो खाता हूं
अच्छे भोजन का मुझको चाव नहीं

गालियां सुन रहा हूं पत्नी की
यह तो उनकी अदा है, ताव नहीं

मेरी बेगम है प्यार की दुश्मन
दूर तक इस नदी में नाव नहीं

रोज़ कहती है मुझको दे दो तलाक़
मेरे ऊपर कोई दबाव नहीं

जबसे शादी हुई है मेरी 'मयंक'
हुस्न से रत्ती भर लगाव नहीं

ये रिश्तेदार मेरे घर में मक्खियों की तरह
जमे हुए हैं सभी क्यों फफूंदियों की तरह

ससुर शरीफ़ है लेकिन हमारी सास न पूछ
घुसी मकान के अन्दर तो आंधियों की तरह

वो टूट पड़ती है जैसे मैं शाख वो बन्दर
में डांट खा के लरज़ता हूं पत्तियों की तरह

मुशायरे से मैं कैसे पलट के घर जाऊं
चबा न ले वो मुझे शार्क मछलियों की तरह

चढ़ी है पीठ पे मेरी सफ़ाई की ख़ातिर
अजीब हाल है शौहर का सीढ़ियों की तरह

गुज़ारा ऐसे ही बरसों से कर रहे हैं हम
वो शौहरों की तरह और मैं बीवियों की तरह

अब उसकी मार 'मयंक' अस्पताल तक लाई
मैं चार कंधों पे आया हूं अर्थियों की तरह

पड़ोसी रात दिन रोने लगा है
इबादत का असर होने लगा है

वतन में पहले पैसे खो रहे थे
यहां अब आदमी खोने लगा है

मैं शाही सूट में हूं और जूता
न जाने कौन से कोने लगा है

कहां इन्सान उगते है ज़मीं से
मगर हर शख़्स मुर्दे बो रहा है

मवाली सर फिरे नादान, पागल
हमारा देश सबको ढो रहा है

सनक जागी सफ़ाई की सभी में
सुना है कोई गंगा धो रहा है

ये हालत देखकर क्यों जी जलाए
'मयंक' अब आंखें मूंदे सो रहा है

इस देश में कोई भी ख़बर ठीक नहीं है
मन्दिर में पुजारी की नज़र ठीक नहीं है

बैठे हैं उसी रेल में उस्ताद हमारे
कहते हैं मुहब्बत का सफ़र ठीक नहीं है

बीवी का है फ़रमान कि मीठी न पियो चाय
कहती है बुढ़ापे में शकर ठीक नहीं है

इक पल में ही आ जाते हैं हाथों में हज़ारों
क्या जेब तराशी का हुनर ठीक नहीं है

बीमारी में, जाओ कहीं तावीज़ पहन लो
अंग्रेज़ी दवाओं का असर ठीक नहीं है

उंगली पे शिकन पड़ गई, एड़ी पे खरोंचें
यह मुफ़्त का जूता है मगर ठीक नहीं है

जो मिलता है उसको ही बता देते हैं पागल
लगता है 'मयंक' आप का सर ठीक नहीं है

रोशनी रंग कायनात में है
एटीएम कार्ड मेरे हाथ में है

जानवर ध्यान अब नहीं देते
आदमी, आदमी की घात में है

कर्म से कुछ पता नहीं चलता
आजकल कौन नीची ज़ात में है

या वतन में हैं हादासात बहुत
या वतन अपना हादसात में है

बैठे रहते हैं शाख़ पर उल्लू
और चतुराई पात पात में है

जंगलीपन है सबकी फ़ितरत में
आदमीयत सभी की बात में है

दुश्मनों को इसी का है अफ़सोस
क्यों 'मयंक' आज भी हयात में है

हमारा प्यार वो स्वीकार कर लें
तो हम अन्डे को शाकाहार कर लें

यहां मुद्दत से अन्धे ढूंढते हैं
कोई काना मिले, सरदार कर लें

नदी के पार है महबूबा अपनी
अगर मुर्दा हो, दरिया पार कर लें

शिकायत ही नहीं करता है शौहर
वो बेगम हैं, वो अत्याचार कर लें

मिनी स्कर्ट पर झगड़ा है सारा
मैं कहता हूं इसे शलवार कर लें

सुना है जेल में रहने लगे हैं
चलो भगवान का दीदार कर लें

'मयंक' इतनी सजावट मौत में भी
करें क्या, मौत को त्योहार कर लें

कहा ये किसने सुख़नवर मेरी तलाश में हैं
तमाम शहर के बन्दर मेरी तलाश में हैं

मैं आदमी हूं मेरे भाग्य में है विष पीना
मुझे पता है कि शंकर मेरी तलाश में हैं

गली में उसकी बहुत भीड़ थी, मैं भाग आया
अब उस गली के भी पत्थर मेरी तलाश में हैं

मैं अपने गांव का तालाब साफ़ कैसे करूं
अभी तो डेंगू के मच्छर मेरी तलाश में हैं

मुशायरों में मेरी शोहरतें बढ़ी जब से
ग़ज़ल के सारे धुरन्धर मेरी तलाश में हैं

मैं काले धन को भी उजला बनाता हूं लेकिन
पुलिस महकमे के अफ़सर मेरी तलाश में हैं

'मयंक' मेरी शराफ़त का बोलबाला है
यहीं इलाक़े के लोफ़र मेरी तलाश में हैं

ज्योति आज़ादी की मन में फिर जला सकती है क्या
पूछ लेना, क़ौम अपनी घास खा सकती है क्या

रंक हो, राजा हो, सबके मन में बैठा है सवाल
नौजवानी इस बदन में लौट आ सकती है क्या

रेल की रफ़्तार पर कल्लू ने राधे से कहा
यार अपनी बैलगाड़ी तेज़ जा सकती है क्या

उसकी बत्तीसी नई है, मुझको इसका ख़ौफ़ है
मेरी बीवी अब मुझे कच्चा चबा सकती है क्या

जिस पुलिस अफ़सर को जब देखो वही सादा लिबास
भीड़ वर्दी देखकर पत्थर चला सकती है क्या

अन्त में जनता से नेता पूछ ही बैठा ये प्रश्न
तू भिखारी की तरह पैसे कमा सकती है क्या

झील सी आंखें, नहीं बहलाइए हमको 'मयंक'
आंख पत्थर की हो तो आंसू बहा सकती है क्या

शराफ़त और मर्यादा की सीमा याद आती है
इलेक्शन ही में नेताओं को जनता की याद आती है

नज़र कुछ भी नहीं आता किसी भी पूर्व मंत्री को
उसे हर वक़्त सुख सुविधा, वो सत्ता याद आती है

कोई मतलब नहीं गंगोत्री, हरिद्वार, पटना से
सभी लोगों को बस काशी की गंगा याद आती है

निकल कर अपने दल से जब किसी को दल बदलना हो
विपक्षी दल के नेता जी की महिमा याद आती है

वचन कैसा, यहां लोगों की क़िस्मत में है आश्वासन
वचन के नाम पर तो बाण शैया याद आती है

ग़ुलामी के दिनों में कौन इसको याद करता था
मगर आज़ाद भारत में सुरक्षा याद आती है

'मंयक' अपनी जवानी में हमें था हुस्न का चस्का
बुढ़ापा है तो अब पत्नी की पूजा याद आती है

जब उसके हाथ का बेलन हमारे काम आता है
न अनुशासन, न योगासन हमारे काम आता है

पिटाई से वो थक जाती है फिर भी हम नहीं हिलते
ये गौतम बुद्ध का दर्शन हमारे काम आता है

हमें गांधी की बातों नीतियों से कौन सा मतलब
मगर गांधी का विज्ञापन हमारे काम आता है

सफ़ाई करके कूड़ा किस जगह फेंकें, बड़ी मुश्किल
पड़ोसी का बड़ा आंगन हमारे काम आता है

अपरिचित हमसफ़र, परिचित हमारे काम आते हैं
सदा मांगा हुआ मंजन हमारे काम आता है

हसीनाएं उठा लेती हैं हमको गोद में अकसर
हमारे क़द का बौनापन हमारे काम आता है

'मयंक' इसके सहारे मिलती है इमदाद पैसों की
हमारी भुखमरी का फ़न हमारे काम आता है

एक सपना देखता हूं बार बार
मेरी बेगम रो रही हैं ज़ार ज़ार

क्या करूं कैसे करूं, साली से प्यार
हर घड़ी बीवी है छाती पर सवार

उस पे मर जाने की हसरत है मगर
मौत पर होता है किसका अख़्तियार

कोमलांगी, सिन्फ़े नाज़ुक थी कभी
आज की औरत का मतलब मर्दमार

एक पैदल यात्रा शनिवार को
बुध को नेता जी को चढ़ आया बुख़ार

मुफ़्त की जो तोड़ते हैं रोटियां
उनके ही चेहरों पे आता है निखार

एक मोटा सा लिफ़ाफ़ा दे दिया
अब 'मयंक' अपना भी होगा बेड़ा पार

पहाड़ों को लगी राई की चिन्ता
हुई संसद को मंहगाई की चिन्ता

किसी नेता के चेहरे पर पसीना
कई चमचों को है भाई की चिन्ता

मदद सरकार की खेती को, जैसे
फटे पतलून पर टाई की चिन्ता

बुढ़ापा देश में आएगा कैसे
सभी करते हैं अब डाई की चिन्ता

ये मेमोरी कार्ड ये डीजे का सिस्टम
भला अब कैसी शहनाई की चिन्ता

जिन्होंने चोट खाई है बदन पर
उन्हें होती है पुरवाई की चिन्ता

'मयंक' अब मत करो दिल्ली की बातें
करो बीजिंग-शंघाई की चिन्ता

हमेशा सुख नहीं मिलता है, बीमारी भी होती है
हमें रिश्वत पचा लेने में दुश्वारी भी होती है

कहां तक आंसुओं को देखकर पिघलाएं खुद को हम
कहीं पर आंसुओं के साथ मक्कारी भी होती है

वतन से प्यार सच्चा है, ज़रूरी है परखना भी
वतन के नाम पर अक्सर अदाकारी भी होती है

समुन्दर की हवाओं का असर कुछ हो गया ऐसा
सदा मीठी नहीं होती, नदी खारी भी होती है

पुरुष को इस ज़माने में कोई पीड़ित नहीं कहता
मगर नारी सदा अबला है, बेचारी भी होती है

किसी ग़द्दार को ज़िन्दा सलामत आप मत छोड़ें
सुना है राख की परतों में चिंगारी होती है

'मयंक' अब नान वेजीटेरियन भी शाकाहारी हैं
दिखाने के लिए भोजन में तरकारी भी होती है

हमेशा झूठ को ताली मिलेगी
मगर सच्चाई को गाली मिलेगी

अकेली वो बहन दस भाइयों की
मुझे अरमान था, साली मिलेगी

दुखी बोला मेरा घर ही नहीं है
बताओ कैसे घर वाली मिलेगी

कन्हैया, राम दोनों सांवले थे
तू गोरा है, तुझे काली मिलेगी

करें सब लोग कन्या भ्रूण हत्या
दुल्हन के नाम पांचाली मिलेगी

इधर बंजर हैं या फिर खेत सूखे
फ़क़त चेहरों पे हरियाली मिलेगी

न काला धन, न रिश्वत पास अपने
'मयंक' इस बार बदहाली मिलेगी

चांद उधर आसमान से निकला
चोर मेरे मकान से निकला

शेर को मारा गांव वालों ने
तब शिकारी मचान से निकला

जेब कटने पे बोले पण्डित जी
आपका पाप दान से निकला

मार से भूत सारे भाग गए
सच हमारी ज़बान से निकला

युद्ध में हाथ पांव फूल गए
तीर किसकी कमान से निकला

तुम तो फ़ारेन से बीज लाए थे
एक दाना भी धान से निकला

कितनी दहशत में वर्दियां थीं 'मयंक'
जब कि मुजरिम तो शान से निकला

हाथ ऊपर कीजिए और फेंकिए हथियार भी
मौन रहना सीखिए फिर सहिए अत्याचार भी

सामने सम्मान दे कर पीछे कहते हैं सभी
एक सच्चा आदमी तो देश पर है भार भी

दर्द मंहगाई का झेलें, ख़ौफ़ दंगों का सहें
डंक से लगने लगे हैं इन दिनों त्योहार भी

नौजवानों पर असर करता नहीं कोई इलाज
दिल से घायल हैं सभी, मस्तिष्क से बीमार भी

दान, हमदर्दी, मदद पर स्वस्थ लोगों की नज़र
है सभी की कामना दिखते रहें लाचार भी

त्याग का मतलब है देशी वस्तुओं से मोह त्याग
साधु संतों को पंसद आई विदेशी कार भी

सत्य के रस्ते पे चलना आपको भाया 'मयंक'
आपका संसार अच्छा है मगर बेकार भी

फटीचर और दरदर के भिखारी
उन्हें भी मिल गई शाही सवारी

मिलेगा खेल का आनन्द सबको
अभी संसद में पहुंचे हैं मदारी

वतन में जाने कब से लापता है
कहां से लाओगे ईमानदारी

महीनों से है दुश्मन सरहदों पर
सदन में आज तक सोचा विचारी

समर्थन ही समर्थन हर दिशा में
सुना है बिक चुके हैं क्रान्तिकारी

अगर तुम इस तरह रोते रहोगे
लहू आंखों से हो जाएगा जारी

'मयंक' उपदेश मत दीजे किसी को
सभी को चाहिए कोठा अटारी

हमें देश की जग हंसाई की चिन्ता
उन्हें अस्सी प्रतिशत कमाई की चिन्ता

यहां दूध का ध्यान किसको है भाई
सभी को पड़ी है मलाई की चिन्ता

ज़माने में भाई है भाई का दुश्मन
फ़क़त नेताजी को है भाई की चिन्ता

नदी में कहीं बूंद भर जल नहीं है
मग़र अफ़सरों को है काई की चिन्ता

बजट देश का अरबों खरबों में पहुंचा
हमें आज भी पाई-पाई की चिन्ता

मवेशी और इन्सान सब एक जैसे
किसे काट डाले, कसाई की चिन्ता

'मयंक आप हर काम से मन हटा लें
अभी है वतन को सफ़ाई की चिन्ता

इश्क़ का इम्तहान मत देना
प्यार में अपनी जान मत देना

फ़ायदे वाली सुनके याद रखो
हर नसीहत पे कान मत देना

बोली सरकार, अभी चुकाओ लगान
नेता बोले लगान मत देना

आ गए हो अगर सियासत में
कोई सच्चा बयान मत देना

बात करने में कोई हर्ज नहीं
बस किसी को ज़बान मत देना

बिल्डरों को ज़मीन दी तूने
ऐ ख़ुदा आसमान मत देना

थोड़ी कड़वी ज़रूर हैं ये 'मयंक'
मेरी बातों को छान मत देना

वोटर मुस्लिम, वोटर हिन्दू, अच्छा है
खाते रहिए किशमिश, काजू, अच्छा है

तीस जनवरी को कैसा था, यह बोलो
दो अक्टूबर को तो बापू अच्छा है

नेताओं से तुलना का परिणाम सुनो
हर कोई कहता है, डाकू अच्छा है

अब शोले हैं हर औरत की आंखों में
गुंडों की आंखों में आंसू अच्छा है

ज़हर भरी अपनों की बातें क्या सुनिए
डंक मारने वाला बिच्छू अच्छा है

पागल ही कहते हैं उल्लू को उल्लू
बुद्धिमान कहते हैं उल्लू को अच्छा है

सब 'मयंक' तेरे बारे में कुछ बोलें
तू कैसे कह सकता है तू अच्छा है

मियां मजनूं का हो सकता है रेगिस्तान से नाता
समझदारी का नामुमकिन है पाकिस्तान से नाता

अमीरो आप का कैसे लगे इन्सान से नाता
अभी तो लग रहा है योग से और ध्यान से नाता

ये बंगला क़ीमती कारें, ये सुविधाएं बताओ तो
तुम्हारा किस तरह से हो गया शैतान से नाता

इक आश्रम और विज्ञापन, सफ़ाई हाथ की सीखी
बहुत चर्चा है मेरा जुड़ गया भगवान से नाता

तिलक, धोती, खड़ाऊं और झोला पास हैं जिसके
समझता है कि बस उसका हुआ है ज्ञान से नाता

बहू को घर में आए दो बरस पूरे हुए, फिर भी
अभी टूटा नहीं कैसे तेरा सन्तान से नाता

मियां-बीवी में बेलन और सर, आदत हुई अपनी
'मयंक' अब हम निभा लेते हैं इत्मीनान से नाता

हर एक इल्म सयाना तलाश करता है
जो चोर है उसे थाना तलाश करता है

कोई मज़ार, कोई चर्च, मन्दिर और मस्जिद
यहीं भिखारी ठिकाना तलाश करता है

ग़रीब शख़्स की ख़्वाहिश है पेट भर जाए
मगर अमीर ख़ज़ाना तलाश करता है

किचन में अपने मैं ताला लगा के रखता हूं
पड़ोसी मुफ़्त का खाना तलाश करता है

अजीब चीज़ है शायर की ज़ात, बरसों से
किधर लगाऊं निशाना, तलाश करता है

हमारे मुल्क से गुम हो गई है सच्चाई
चराग़ ले के ज़माना तलाश करता है

कठिन सवाल उठाती है रोज़ ही बीवी
'मयंक' रोज़ बहाना तलाश करता है

इतना ऊंचा मक़ाम किसका है
वो बड़ा वाला आम किसका है

सामने मेरे लाए हो कुल्हड़
और वो शीशे का जाम किसका है

कुछ किलर घूमते हैं बस्ती में
आज क़िस्सा तमाम किसका है

एक दल ने बना लिया अपना
अब अयोध्या का राम किसका है

एक कप चाय, इक अदद सिग्रेट
ख़ाकी वर्दी, ये दाम किसका है

घर का मालिक हूं और मेरा वजूद
क्या बताऊं, ग़ुलाम किसका है

मेहनत इसमें भी है 'मयंक' बहुत
काला पैसा हराम किसका है

दुश्मन खड़े हैं हाथों में पत्थर लिए हुए
हम बदहवास बैठे हैं ख़ंजर लिए हुए

प्यासे निकल पड़े हैं कुएं की तलाश में
यह लोग कितना ख़ुश थे समन्दर लिये हुए

अब तो मेरा उधार चुका दीजिए हुज़ूर
मुद्दत हुई है आपको अवसर लिए हुए

यह और बात है कि अमीर उड़ नहीं सके
सदियां गुज़र चुकी हैं इन्हें पर लिए हुए

इतनी सुरीली सुनके सदा लोग आ गए
बाहर फ़क़ीर आए थे चादर लिए हुए

फिर हम तमाशा देखेंगे मिलकर चुनाव का
घर घर मदारी आएंगे बन्दर लिए हुए

पैसा 'मयंक' इल्म पे भारी बहुत पड़ा
कुछ लोग थे नगर में मुक़द्दर लिए हुए

इससे पहले आए आफ़त, छोड़िए
हुस्न वालों से मुहब्बत छोड़िए

हाथ जब थामा तो बीवी ने कहा
इस बुढ़ापे में ये हरकत छोड़िए

दोस्तो शादी शुदा हैं आप लोग
साधुओं, संतों की संगत छोड़िए

मिल रहा है धन तो ठुकराएं नहीं
क्या करेंगे रखके इज़्ज़त, छोड़िए

लूटिए दुनिया को, ज़िन्दा रहिए आप
भूखे मर जाने की आदत छोड़िए

गालियों से पेट भर जाएगा क्या
मैं भी कहता हूं, शराफ़त छोड़िए

लड़कियों का कीजिए पीछा 'मयंक'
घर में योगासन की कसरत छोड़िए

धन वालों के यार बहुत हैं
यानी खरपतवार बहुत हैं

दिल्ली का दरबार न पूछो
दिल्ली में दरबार बहुत हैं

रोज़ चोरियां काग़ज़ पर तो
शहर में पहरेदार बहुत हैं

कार कबाड़ी ले जाएगा
कल पुर्ज़े बेकार बहुत हैं

कौन ज़मानत लेगा आपकी
अपने रिश्तेदार बहुत हैं

तारीफ़ें होती हैं मेरी
पीठ के पीछे वार बहुत हैं

रोज़ाना क्यों खाते हैं फल
क्या 'मयंक' बीमार बहुत हैं

शहर में कौन आने वाला है
रात के वक़्त भी उजाला है

पूर्णमासी तो आ गई लेकिन
चांद का चेहरा कितना काला है

यह अभी मेरे मुंह के अन्दर था
आपके मुंह में जो निवाला है

एकता का जलूस अब कैसे
इन दिनों पांव पांव छाला है

कोई भी इससे बच न पाएगा
छल तो इक पारदर्शी जाला है

उम्र गुज़री तो हमने यह जाना
ब्याह कुंजी नहीं है, ताला है

अब 'मयंक' ऐसा लगता है हमको
धर्म नफ़रत की पाठशाला है

अब भी पड़ा हुआ हूं उसी के ख़याल में
जिसकी बदौलत आज हूं मैं अस्पताल में

इंसाफ़ चाहिए था, अदालत चला गया
क्या मैं अनाज ढूढ़ रहा हूं अकाल में

आक़ा ने जब से थोड़ा सा रुतबा बढ़ाया है
थोड़ी नज़ाकत आई है ख़ादिम की चाल में

हीरे का दाम सिर्फ़ सवा लाख था मगर
इससे ज़ियादा ख़र्च हुआ देखभाल में

नेता बटर चिकन ही नहीं, चारा खा गए
हम लोग उलझे रहते हैं बस रोटी दाल में

दोनों ही पेट भरते हैं दोनों ही ठीक हैं
तुम फ़र्क़ तो बताओ हराम और हलाल में

घर वाली गांव में है तो महबूबा शहर में
बोलो 'मयंक' किससे मिलें अगले साल में

ऐ काश हमारे ख़्वाबों में इक रोज़ क़रीना आ जाए
गर सैफ़ न आने दे उसको तो मिस कैटरीना आ जाए

जब ख़्वाब करिश्मा का टूटा तो सामने बीवी हाज़िर थी
फिर देखके बेलन हाथों में कैसे न पसीना आ जाए

बाबाओं ने जबसे यह जाना देवर वो लगेंगे फागुन भर
हर बूढ़े की यह ख़्वाहिश है, फागुन का महीना आ जाए

सरकार की इच्छा भी है यही, भूखे तो रहें, प्यासे न रहें
घर घर में मिनी मयख़ाना हो, बच्चों को भी पीना आ जाए

अख़बार यही बतलाते हैं दलदल है वतन अपना लेकिन
चाहत है मेरी सब लोगों को दलदल में भी जीना आ जाए

ख़ुद सूरत है बनमानुष की लेकिन इच्छाएं मत पूछो
इन की चाहत है इनके घर इक शोख़ हसीना आ जाए

धर्म स्थल पर है छूट 'मयंक' आए कोई जाए कोई
नामुमकिन है मयख़ाने में कोई भी कमीना आ जाए

सबके सब बेदाम पड़े रह जाते हैं
देश भक्त गुमनाम पड़े रह जाते हैं

मेघनाद, रावण के बिकते हैं पुतले
सीता, लक्ष्मन राम पड़े रह जाते हैं

बाइज़्ज़त बाहर आते हैं अपराधी
काग़ज़ पर इल्ज़ाम पड़े रह जाते हैं

अब के झूठों को झूठों से लड़ने दो
सच्चे तो नाकाम पड़े रह जाते है

धोखा, छल, साज़िश, लालच के जाल बुनो
इस युग में संग्राम पड़े रह जाते हैं

दहशत में घर की थाली छूटी तो क्या
मयख़ाने में जाम पड़े रह जाते हैं

मेहनतकश भी अब 'मयंक' बेकारी में
सुबह से लेकर शाम पड़े रहे जाते हैं

हां बेईमानी तो होगी
लेकिन आसानी तो होगी

हमको साज़िश से क्या ख़तरा
जानी पहचानी तो होगी

सच कहने का वक़्त आया है
अब आनाकानी तो होगी

तू मुफ़लिस है तेरी उलफ़त
इक दिन बेगानी तो होगी

मज़हब पर पैसे आएंगे
यह जनता दानी तो होगी

अच्छा खासा लोकतंत्र है
फिर भी मनमानी तो होगी

अब 'मयंक' दुनिया को देखो
तुमको हैरानी तो होगी

मिड डे मील का मतलब शिक्षा
सारे गामा है मनरेगा

ख़ाकी से पंगा ले बैठे
भाव घट गया नेता जी का

देश की सेवा ग़द्दारी है
देश भक्ति यानी अमरीका

मंत्री जी सच कैसे बोलें
सच अब भी लगता है तीखा

नोटों की गड्डी दिखलाओ
कौन मांगता है अब पैसा

रोटी से मंहगा है पानी
आम से मंहगा हुआ पपीता

तू 'मयंक' चुप ही रहता था
तूने अपना मुंह क्यों खोला

रंज पर, दर्द पर, ख़ुशी पर है
कैमरे की नज़र सभी पर है

बीवी भूखा रखे या सर फोड़े
मेरा हर फ़ैसला उसी पर है

लड़की समझी फ़िदा है वो लेकिन
चोर की आंख तो घड़ी पर है

कीमती चीज़ें, हुस्न या पैसा
क्या उठाएगा, लालची पर है

ब्याह में होंगे सिर्फ छप्पन भोग
ध्यान लोगों का सादगी पर है

मंहगे कपड़े हैं, मंहगे मोबाइल
कौन सी क़ौम भुखमरी पर है

शायरी करते रहिए आप 'मयंक'
यह नशा सिर्फ़ आप ही पर है

पूजा में हमने पाए हैं तोहफ़े नए-नए
मन्दिर से ले के आए हैं जूते नए-नए

हम चीन को पछाड़ के रख देंगे एक दिन
हर साल पैदा करते हैं बच्चे नए-नए

सरकार ले के आई है वादों की पोटली
सारा पुराना माल है, डब्बे नए-नए

मंत्री के हर बयान पे मोहित है सारा देश
हर बात से निकलते हैं लच्छे नए-नए

पत्नी के हर सवाल पे चुप रहना है भला
किस में है दम उठाए जो पंगे नए-नए

यह काटते नहीं है, फ़क्त दुम हिलाते हैं
लाए गए हैं शहर में कुत्ते नए-नए

पिछले चुनाव का है यही फ़ायदा 'मयंक'
संसद में अब के आए निक्कमे नए-नए

बांदियों से भी चाह की बातें
सुनिए आलम पनाह की बातें

हुस्न का ज़िक्र कौन करता है
हर तरफ़ हैं निगाह की बातें

प्यार की बात अब नहीं होती
लोग सुनते हैं डाह की बातें

शेख़जी आपको पता ही नहीं
हमसे सुनिए गुनाह की बातें

यार शादी तो एक बंधन है
ज़िन्दगी भर निबाह की बातें

मंत्री जी अब नई न दिखलाओ
क्या हुईं पिछले माह की बातें

मैं वज़ीरों का हूं मुरीद 'मयंक'
भाड़ में जाएं शाह की बातें

नेता दुनिया छोड़ देगा, धन कहां
सांप केंचुल छोड़ता है, तन कहां

उम्र पैंसठ की हुई है आप की
बोलिए पाएंगे अब दुल्हन कहां

मुर्ग़ के भी आठ टुकड़े हो गए
दिल यहां, सीना वहां, गर्दन कहां

वह जो बत्तीसी लगाकर आए हैं
पूछते हैं रोब से, मंजन कहां

आप इन्टरनेट में हैं, टीवी पे हैं
ख़ुद कहां और आप का दर्शन कहां

तुलसी, बेरी, नीम, पीपल, नारियल
पेड़ गमलों में हैं अब आंगन कहां

जिस्म पर देखो 'मयंक' आंखें गड़ीं
देखते हैं लोग विज्ञापन कहां

देखिए दावों की भाषा, लनतरानी हो गई
बाढ़ आई तो हुकूमत पानी पानी हो गई

मेरे दादा जान का क़द सात फ़िट था इसलिए
कोट उनकी मेरे तन पर शेरवानी हो गई

कौन कहता है बुढ़ापा जा के आता ही नहीं
बाल रंगिए, क्रीम मलिए, नौजवानी हो गई

ढेर सारी उनकी दौलत मिल गई आख़िर मुझे
मर गए अब्बा तो मेरी ज़िन्दगानी हो गई

कोट और पतलून को सैल्यूट देते हैं सभी
इन दिनों धोती ग़ुलामी की निशानी हो गई

खेतों में कालोनियां, शापिंग सेन्टर और मॉल
क़ैद गमलों में यहां खेती किसानी हो गई

प्यार में घर की सफ़ाई मेरे ज़िम्मे है 'मयंक'
काम वाली बाई घर की राजरानी हो गई

दुआ करो कि उदासी का दौर टल जाए
किसी तरह से मेरा जाली नोट चल जाए

सहेली आई है बीवी की और वो घर में नहीं
ख़ुदा करे कि अभी मेरी दाल गल जाए

इधर है सास का आदेश, ज़हर दे दो इसे
मैं चाहता हूं ससुर कार से कुचल जाए

तमन्ना अपनी है बेगम को दिल का दौरा पड़े
तबीयत अपनी भी कुछ दिन ज़रा बहल जाए

इसी इरादे से कर ली है दूसरी शादी
कुछ अच्छे लोग हों, सुसराल तो बदल जाए

हसीन अपनी पड़ोसन से मैं ने पूछी कुशल
चमक के बोली, तेरी भाड़ में कुशल जाए

'मयंक' मेरी लुगाई को मुझसे नफ़रत है
किसी से प्यार जताना भी उसको खल जाए

किस क़दर भोले है शंकर, पी गए
ज़हर को बूटी समझ कर पी गए

खून आधा पी गई पत्नी मेरी
जो बचा था उसको मच्छर पी गए

एक लीटर जल नहीं पीता कोई
एक ऋषि थे जो समन्दर पी गए

यह दवा दारू अजब सा शब्द है
हम इसी धोखे में अक्सर पी गए

देख लेगा कोई तो सोचेगा क्या
ओढ़ ली हमने भी चादर, पी गए

वो नशाबंदी कमेटी की सचिव
तीन बोतल उनके शौहर पी गए

बिल्डरों का जिक्र मत कीजिए 'मयंक'
वो तो धरती और अम्बर पी गए

बीवी मिली तो सबकी मुहब्बत चली गई
जिस तरह चोर आए तो दौलत चली गई

चाहा था उस हसीन से चेहरे को चूम लूं
लड़की पुलिस में थी, मेरी हिम्मत चली गई

दो उंगलियों में ज़ख़्म हैं, काटूं मैं कैसे जेब
मैं जानता हूं, हाथों से बरकत चली गई

यह देखकर, ज़लील ही पाते हैं कुर्सियां
दुनिया से रफ़्ता रफ़्ता शराफ़त चली गई

हां, तुमको मारा पीटा गया, इल्म है मुझे
तुम क्यों ये कह रहे हो कि इज़्ज़त चली गई

वो मायके गई तो मुझे चैन आ गया
अच्छा हुआ जो घर से मुसीबत चली गई

आया बुढ़ापा ऐसा कि अब क्या कहूं, 'मयंक'
मेरी तमाम शहर से दहशत चली गई

बहू के लहजे की काट साहब
खड़ी है अपनी भी खाट साहब

चलो मशीनें दिखाऊं तुमको
न ढूंढो धोबी का घाट साहब

वो ऊंची ऊंची इमारतें हैं
कभी यहां पर थी हाट साहब

ये काम चोरों ने कब किया है
पुलिस ने तोड़े कपाट साहब

मुझे कोई आदमी दिखाओ
अहीर, गुर्जर न जाट साहब

चरित्र से तो गिरे हुए हैं
मगर है उन्नत ललाट साहब

'मयंक' मुफ़लिस नहीं है कोई
सभी यहां पर हैं लाट साहब

समय का आज तक़ाज़ा है, ज़िन्दाबाद कहो
मदारियों का तमाशा है ज़िन्दाबाद कहो

मेरी ज़बान अभी तक नहीं बिकी लेकिन
तुम्हें किसी ने ख़रीदा है, ज़िन्दाबाद कहो

जो चाहते हो कि इज़्ज़त बची रहे जग में
तो सिर्फ़ एक तरीक़ा है, ज़िन्दाबाद कहो

नदी की बाढ़ से बच जाएं तो कहें हम कुछ
तुम्हारे गांव में सूखा है, ज़िन्दाबाद कहो

बहुत से ख़्वाब दिखाए चुनाव से पहले
चुनाव का ये नतीजा है, ज़िन्दाबाद कहो

अमीर लोगों के क़दमों पे सर झुकाते रहे
यही हमारा सलीक़ा है, ज़िन्दाबाद कहो

'मयंक' आंखें उठाओ वो देखो रात गई
गगन पे भोर का तारा है ज़िन्दाबाद कहो

किसी हसीना को आंखों में पाल रक्खा है
ससुर ने सास को धोखे में डाल रक्खा है

हसीन चोरनी, वर्दी भी हार कर बोली
हरामज़ादी ने आंसू उबाल रक्खा है

जहां पे फूलों की बौछार है वही संसद
वहीं वज़ीरों ने जूता उछाल रक्खा है

अब अस्पताल नहीं जाते हैं दवा के लिए
कई बुज़ुर्गों ने गुर्दा संभाल रक्खा है

मैं घर में पोंछा लगाऊं या कपड़े साफ़ करूं
मुझे तो बीवी ने मुश्किल में डाल रक्खा है

जो मुर्दा खा ले तो फिर वो भी ज़िन्दा हो जाए
दवा में वैद्य ने शायद कमाल रक्खा है

मिलन की बात बुढ़ापे में क्या बताऊं मैं
'मयंक' बीवी ने वादों पर टाल रक्खा है

कैसी भिक्षा कैसा कमंडल सर्दी में
संत जी सो गए ओढ़ के कम्बल सर्दी में

सब घर में दुबके है लेकिन सड़कों पर
ढेर से कुत्तों का कोलाहल सर्दी में

लथपथ हुआ पसीने से क्यों हर नेता
संसद के भीतर है दंगल सर्दी में

अक़्लमंद दिन के चढ़ने पर आते हैं
भोर पहर आते हैं पागल सर्दी में

बीवी यह कहकर लाकर में रख आई
पहनूं कैसे ठंडी पायल सर्दी में

दूध, दही, मट्ठा, किसके हैं, ले आओ
दारू और बीड़ी का बंडल सर्दी में

पत्नी से दो चम्मच मैंने मांगे 'मयंक'
चीख़ के बोली, खाओगे चावल सर्दी में

पत्नी जब देती है श्राप
होना पड़ता है चुपचाप

प्रेत बताया पण्डित ने
वैद्य जी बोले, जूड़ी ताप

ख़ून बहा देंगे सबका
ख़ुद तो हैं वो मक्खी छाप

नेता ज्ञानी हैं, बोले
कैसा होता है सन्ताप

टेलर लेकर आए हो
यार क़फ़न में कैसी नाप

आज बुढ़ापा आते ही
बेटा बन जाता है बाप

जायदाद बंट जाए 'मयंक'
हो जाएगा भरत मिलाप

जो साली के आ जाने से पागल है
बीवी की तू तू मैं मैं से घायल है

हर पत्नी होती है उल्फ़त की दुश्मन
हर प्रेमी के घर के भीतर दंगल है

दर्शन सुख की ख़ातिर मन्दिर जाता हूं
भक्त हूं मैं लेकिन मेरा मन चंचल है

एक माह के लिए मायके गई है वो
अपने घर में अब मंगल ही मंगल है

संत कमण्डल में रम लेकर बैठे थे
मैं समझा शायद इसमें गंगा जल है

आप अदब की मंडी में जाकर देखें
सोना सस्ता है और मंहगा पीतल है

कौन है वो जाना पहचाना सा है 'मयंक'
शायद उस चेहरे से मेकअप ओझल है

शरीफ़ इन्सान हूं घर में शराफ़त ले के बैठा हूं
मेरी बीवी मुसीबत है, मुसीबत ले के बैठा हूं

वो फ़ैशन शो से लौट आए, उसे घर से भगा दूंगा
अभी तक तो मैं अपने दिल में हिम्मत ले के बैठा हूं

अजब सन्तान पैदा की, मेरे पल्ले से क्यों बांधा
ससुर और सास की ख़ातिर मैं नफ़रत ले के बैठा हूं

मैं पूजा करता हूं पत्नी की, वह देवी, पुजारी मैं
पड़ोसन के लिए दिल में मुहब्बत ले के बैठा हूं

वही हाकिम, वही रानी, वो तानाशाह, वो हिटलर
बराए नाम इस घर की हुकूमत ले के बैठा हूं

सभी का मशवरा है भाग जाओ, जान को सांसत में मत डालो
सभी कहते है क्यों मैं एक आफ़त ले के बैठा हूं

'मयंक' उल्फ़त, मुहब्बत, क्या बताऊं, ख़्वाब जैसे हैं
मैं उनके हाथ से बेलन की लज़्ज़त ले के बैठा हूं

ज़ालिम है मगर खून का प्यासा भी नहीं है
इस दौर का इन्सान फ़रिश्ता भी नहीं है

हर शख़्स यहां प्यार की देता है दुहाई
लोगों ने सबक़ प्यार का सीखा भी नहीं है

तुम खून पसीने का बहुत लेते हो क्यों नाम
तुमने तो गुलिस्तान को सींचा भी नहीं है

नफ़रत का सफ़र जो भी करे, याद भी रक्खे
इस राहगुज़र में कहीं साया भी नहीं है

हंसकर ही बिता देता है मुश्किल की घड़ी को
खुद्दार बुरे वक़्त में रोता भी नहीं है

टूटा है मगर उसको यहां कौन समेटे
इन्सान तो बिखरा हुआ शीशा भी नहीं है

इक बार 'मयंक' आ गया सच मेरी ज़बां पर
अब साथ मेरे मेरा क़बीला भी नहीं है

पलट कर देखता हूं, ज़िन्दगानी याद आती है
मुझे भूली हुई कोई कहानी याद आती है

शरारत, छेड़ख़ानी, दोस्ती, तकरार, मनमानी
बुढ़ापे में सभी को नौजवानी याद आती है

जो वादे हो गए पूरे फिर उनको याद क्या रखना
मगर हर आदमी को आनाकानी याद आती है

पुराने वक़्त में हर शख़्स इसका ध्यान रखता था
किसी को इन दिनों क्या सावधानी याद आती है

कभी जब छुट्टियां लेकर मैं अपने गांव जाता हूं
मुझे उजड़ी हुई सी राजधानी याद आती है

विदेशी मसअले, डालर, सुरक्षा और मंगल बस
कहां सरकार को खेती किसानी याद आती है

'मयंक' अब टीवी चैनल याद रह जाते हैं लोगों को
कबीरा की कहां लोगों को बानी याद आती है

सामने वाली घर में आ तो जायेगी
बीवी कैसे नींद की गोली खाएगी

नेताओ, नाटक दुहराते रहना तुम
जनता जन गण मन अधिनायक गाएगी

पत्नी पागल हो या छुटकारा दे दे
उस दिन ही सच्ची आज़ादी आएगी

देखना रेस्टोरेन्ट में दोनों जाएंगे
पुलिस चोर को थाने क्यों पहुंचाएगी

किसका धन वापस मिलता है लूट के बाद
माया फिर भी माया है, भरमाएगी

क़ौम नींद से जाग गई तो क्या होगा
बहुत करेगी रोएगी, चिल्लाएगी

तू 'मयंक' डरता है तो फिर ऐसा कर
दारू पी ले, दारू साहस लाएगी

किसको हीरा, सोना, चांदी चाहिए
आपके कुत्तों को हड्डी चाहिए

मैं महादानी हूं, दिल भी है बड़ा
बोलिए स्वामी जी, बीवी चाहिए

दान दो मैं हूं भिखारी, मेरे पास
सूखी रोटी है, ज़रा घी चाहिए

शैख़ जी के जाल में फंस ही गए
रिन्द कहते हैं कि पानी चाहिए

एक बीवी, एक बंगला, एक कार
ज़िन्दगी इससे भी अच्छी चाहिए

सच से छुटकारा मिले मुद्दत हुई
क्या मेरे पैरों को बेड़ी चाहिए

मुफ़्त की सेवा नहीं है यह 'मयंक'
एक दिन हमको भी कुर्सी चाहिए

हम पकौड़ा, समोसा खा लेंगे
और नेता जी चारा खा लेंगें

भूखे रहने के हम तो आदी हैं
आप ने जो भी छोड़ा, खा लेंगे

सब तुम्हारी तरह नहीं होते
उनके चमचे तो जूठा खा लेंगे

खादी वालों से मत लगाना शर्त
आदमी को समूचा खा लेंगे

आज बन्दी का दिन है नेता जी
हम तो बैंगन का भुर्ता खा लेंगे

वोट लेना है, मत करो चिन्ता
मंत्री जी रूखा सूखा खा लेंगे

अब 'मयंक' अस्पताल मत जाना
डाक्टर मिल के गुर्दा खा लेंगे

मयस्सर तो नहीं मैदे के बिस्किट
मगर सपनों में हैं सोने के बिस्किट

मवेशी भी इन्हें चखते नहीं हैं
बने हैं कौन से आटे के बिस्किट

कई शायर इसी पर पल रहे हैं
सड़ी नमकीन, चौराहे के बिस्किट

कहां तक कोई चूहों को खिलाए
कहां तक कोई रक्खे ला के बिस्किट

बफ़े सिस्टम ने मुझ को चाय तो दी
उड़ा डाले मेरे आगे के बिस्किट

मेरे महबूब का ये नाश्ता है
दो बोतल कोक, सौ रूपये के बिस्किट

वफ़ादारी 'मयंक' आएगी उसमें
खिलाओगे जिसे कुत्ते के बिस्किट

चोरों पर कब अपना रोब जमाते हैं
अब कुत्ते वर्दी पर ही चिल्लाते हैं

बेगम बोलीं चल के डिनर तैयार करें
कल की चोट अभी तक क्यों सहलाते हैं

इश्क़ में शरमाना कैसा है साठ के बाद
नौजवान ही उल्फ़त में घबराते हैं

प्यार किया है, आएं उसके घर के लोग
सारे मुहल्ले वाले क्यों लतियाते हैं

ए.सी. रूम पे सास ससुर का कब्जा है
हम दालान में बैठे सर्दी खाते हैं

मन करता है डेनिम जींस पहननने का
बच्चे मुझको धोती ही पहनाते हैं

किटी पार्टी में सखियां हैं पत्नी की
और 'मयंक' जी दूर खड़े ललचाते हैं

फ़लक पर एक धुंधला सा सितारा देख लेना था
उसी की रोशनी मे फिर किनारा देख लेना था

ज़रा सी देर में बस्ती उजड़ कर ख़ाक हो जाती
ग़ुलामों को तो आक़ा का इशारा देख लेना था

बताओ किस सबब से अपनी आंखें मूंद लीं तुमने
हमारी मौत का तुमको नज़ारा देख लेना था

वही मैं था जिसे तुम देखते ही चौंक उट्ठे थे
अगर शक था, पलट कर फिर दुबारा देख लेना था

सफ़र के बीच रोने से तो बेहतर था तुम्हें पहले
नदी है, झील है, पर्वत कि सहरा, देख लेना था

गले में हार सबके डाल आए यह बताओ तुम
यहां पर कौन जीता, कौन हारा, देख लेना था

बिना सोचे विचारे क्यों 'मयंक' अशआर पढ़ आए
किसी को शायरी है भी गवारा, देख लेना था

इन्सान तो इस युग में बाज़ार के ख़ादिम हैं
कुछ लोग मगर अब भी दरबार के ख़ादिम हैं

ये उजड़ी हुई बस्ती ये उजड़े हुए चेहरे
सरकार के बन्दे हैं सरकार के ख़ादिम हैं

सरहद के मकानों तक, दहशत है फ़क़त दशहत
लगता है यहां अब भी ग़द्दार के ख़ादिम हैं

क्यों देश सुधारेंगे इस देश के सेवक भी
बीमार से बदतर तो बीमार के ख़ादिम हैं

धमकी मिला करती है सच बात के लिखने पर
सहमे हुए दफ़्तर में अख़बार के ख़ादिम हैं

दर पर तेरे आएंगे और शोर मचाएंगे
बख़्शीश इन्हें दे दे त्योहार के ख़ादिम हैं

किरदार नहीं बदला हमने तो 'मयंक' अपना
हम प्यार के ख़ादिम थे, हम प्यार के ख़ादिम हैं

हमारे देश को मेहनत मशक़्क़त की ज़रूरत है
मगर कुछ लोग कहते हैं, सियासत की ज़रूरत है

हज़ारों हैं यहां ऐसे भी जो रहते है महलों में
करोड़ों लोग ऐसे हैं जिन्हें छत की ज़रूरत है

हवस दौलत की हर इन्सान पर छाई तो है लेकिन
यहां हर शख़्स कहता है कि इज़्ज़त की ज़रूरत है

सुलगती आग बस्ती, गांव, शहरों तक चली आई
बस इक दिन राजधानी में बग़ावत की ज़रूरत है

बहुत से लोग इस दुनिया में बेकस और मुफ़लिस की
मदद इस वास्ते करते हैं, शोहरत की ज़रूरत है

अदालत ने भी अपने देश में यह हुक्म फ़रमाया
हिफ़ाज़त करने वालों को हिफ़ाज़त की ज़रूरत है

'मयंक' आंखें उठाकर देख लो बाज़ार नफ़रत का
भला इस शहर में किसको मुहब्बत की ज़रूरत है

ससुर और सास घर में जब कभी तशरीफ़ लाते हैं
हम अपना पेट भरने के लिए बाज़ार जाते हैं

बिना मेकअप नज़र आया था इक दिन सास का चेहरा
अगर सोता हूं तो मुझको भयानक ख़्वाब आते हैं

मेरी बीवी को भाभी कहते रहते हैं सभी लेकिन
मुहल्ले वाले मुझको क्यों चचा कह कर बुलाते हैं

गरज ऐसी जिसे सुनकर इलाक़ा कांप जाता है
मगर हम हैं कि उनकी डांट सुनकर मुस्कराते हैं

ख़रीदारी से जब लौटा, नई फ़ेहरिस्त पकड़ा दें
पसीना अपना हम फिर धूप में जाकर सुखाते हैं

मिलन के नाम पर उनकी ज़बां कहती है बस इतना
शरीफ़ इन्सान क्या बेडरूम में कुत्ते सुलाते हैं

हुई मुद्दत पिटाई की थी बेलन से कभी उसने
'मयंक' अब तक मेरी आंखों में तारे झिलमिलाते हैं

अकेले में तो आंखों की सिंकाई ख़ूब होती है
कोई जब देख लेता है, धुलाई ख़ूब होती है

जवानी में मुहब्बत कीजिए तो लोग जलते हैं
बुढ़ापे में इसी से जग हंसाई ख़ूब होती है

हमारी सास पक्की ठग, उचक्के हैं मेरे साले
सुसर जी की भी थाने में पिटाई ख़ूब होती है

पुलिस वाले ही आते हैं छुड़ाने के लिए मुझको
मेरी बेगम के पंजों से रिहाई ख़ूब होती है

यहां मुद्दत से चूल्हा बन्द, खाना बन्द, पीना बन्द
मगर इस घर में चौके की सफ़ाई ख़ूब होती है

अजब तेवर लिए आता है मेरी सास का ग़ुस्सा
जो देखे वो कहेगा, काली माई ख़ूब होती है

भिखारी शब्द है ऐसा बुरा लगता है सुनने में
'मयंक' इस काम से लेकिन कमाई ख़ूब होती है

एड़ियों में मैल इतना भर गया
एक आशिक़ देखते ही डर गया

वो भी टूटी सैंडल लेकर गई
मैं भी अपने घर लहू से तर गया

मुझको मजनूं क्यों समझ लेते हैं लोग
जो भी आया, मार कर पत्थर गया

मिल गया आख़िर अदालत से तलाक़
बीवी बोली मुफ़्त का नौकर गया

जिस घड़ी सरकार संसद में गिरी
तब मदारी ने कहा, बन्दर गया

वर्दी वालों को तरक़्क़ी मिल गई
एक मै सच्चा था, बन्दीघर गया

हर गली कूचे में दिखता है 'मयंक'
कौन कहता है कि रावण मर गया

उन्हें पूजा को दिखते हैं करोड़ों देवता देवी
न जाने घर में अपने कब करेंगी कुछ दया देवी

मैं सारे देवताओं को मना सकता हूं पल भर में
मेरे जीवन में लेकिन बन गई है मसअला देवी

हम अफ़सर हैं मगर घर में हमीं भोजन पकाते हैं
बना देती हैं चौके में हमें भी क्या से क्या देवी

महीनों बाद हमको प्यार दिखलाती है वो इक दिन
महीनों बाद लगती है हमें वो कर्कशा देवी

जमाई हूं, ठिकाना है मेरा ससुराल, इस कारण
मेरी पत्नी नज़र आती है मुझको अप्सरा, देवी

उसे चौबीस घंटे क्रोध में रहना ही आता है
मुझे दिन रात दर्शन दे रही है कालिका देवी

कभी सीता, सती सावित्री का ज़िक्र होता था
'मयंक' इस दौर में होती है केवल मंथरा देवी

बुर्जुवा हूं, कोई सर्वहारा नहीं
सूखी रोटी पे मेरा गुज़ारा नहीं

एक दिन सत्यवादी को रिश्वत मिली
उसने एक पल भी सोचा विचारा नहीं

दाग़ हैं उनके चेहरे पे, इस वास्ते
चांद हैं मेरी बेगम, सितारा नहीं

मेरे पिटने पे क्यों इस कद्र शोर है
कौन है जिसको पत्नी ने मारा नहीं

बीवी देखे, सुने, बोल पाए न कुछ
इससे अच्छा तो कोई नज़ारा नहीं

अपने रिश्तों को यूं हमने तरजीह दी
जो फटे हाल है वो हमारा नहीं

ब्याह का दिन था वो फिर 'मयंक' आज तक
यह ग़ुलामी का पट्टा उतारा नहीं

बताओ कौन अंगूठा मांगता है
हर इक उस्ताद पैसा मांगता है

मियां बहनोई और भाई को छोड़ो
पड़ोसी घर में हिस्सा मांगता है

इसे मैं फ़ीस में दूं भी तो कैसे
चिकित्सक मुझसे गुर्दा मांगता है

बहुत लम्बा है नेता जी का भाषण
मेरा मन सिर्फ सोना मांगता है

लड़ाई झोंपड़ों की लड़ने वाला
फ़कत बंगले में रहना मांगता है

नहीं है त्याग की हिम्मत किसी में
यहां हर संत सुविधा मांगता है

'मयंक' इस उम्र में भी मन हमारा
मटन, फ़िश फ़्राई, मुरग़ा मांगता है

अब काम पड़ा तो वो लुभाने में लगे हैं
हम अपनी पिटाई को भुलाने में लगे हैं

दावत में ये चिन्ता है कि मैं कैसे भरूं पेट
अहबाब मुझे आंख दिखाने में लगे हैं

अफ़सर हूं मेरे सास-ससुर हो गए पी.ए.
साले तो मेरा नाम भुनाने में लगे हैं

सैलाब में राहत की न रखना कोई उम्मीद
नेता जी यहां सिर्फ कमाने में लगे हैं

मशहूर हुआ मैं इन्हीं चमचों की बदौलत
चमचे ही मेरी अर्थी सजाने में लगे हैं

पूरब की तरफ़ जाएं कि पच्छिम की तरफ जाएं
अंधे ही यहां राह बताने में लगे हैं

मांगा है लहू देश ने लोगों से 'मयंक' आज
कुछ लोग लहू अपना सुखाने में लगे हैं

हर बराती हो गया बेचैन ताड़ी के लिए
और दूल्हा अड़ गया है रेलगाड़ी के लिए

ख़त लिखो, तारे गिनो, दर्शन करो और लौट जाओ
प्यार का यह अर्थ निकला है अनाड़ी के लिए

देश के निर्माण में देता नहीं है योगदान
किन्तु हर मज़दूर मर जाता है खाड़ी के लिए

बुद्धि वाले थक गए बोले कि धरती है बड़ी
जबकि यह धरती बहुत कम है जुगाड़ी के लिए

एक बुनकर साल भर से कर रहा है इन्तज़ार
हमने कीड़े पाले हैं बीवी की साड़ी के लिए

क़त्ल में व्यायाम का एहसास होना चाहिए
मैं बयाना दे के आया हूं कुल्हाड़ी के लिए

आगे आगे अफ़सरों का एक मजमा है 'मयंक'
सिर्फ हम जैसे हैं साहब की पिछाड़ी के लिए

कोई फल पाता है हाकिम के उठाकर जूते
और कोई लाभ कमाता है दिखाकर जूते

लाठियां, पानी की बौछार के संग आंसू गैस
हम भी खुश हो गए वर्दी पे चलाकर जूते

यार शादी का मज़ा लेते हैं बच्चे अक्सर
पैसा पा जाते है दूल्हा के चुरा कर जूते

हम से कहते हो कि सम्मान मिला है तुमको
जबकि तुम आए हो दरबान से खाकर जूते

जन्मदिन पर सभी जूतों पे गिरे पड़ते हैं
हमने सी.एम. को दिये थाल सजाकर जूते

मंच पर सबको नहीं मिलती मुहब्बत इतनी
हर किसी को नहीं मिल पाते हैं गाकर जूते

तुम उठा लाते हो, क़िस्मत के धनी तुम हो 'मयंक'
लोग आ जाते है मन्दिर से गंवा कर जूते

अरबों ख़र्चे गए, तफ़सील बताई न गई
कचरा गंगा से गया और ये काई न गई

ऐसी बत्तीसी है किस काम की बोलो जिससे
मुर्ग़ की नर्म सी हड्डी भी चबाई न गई

क्रीम, जेल कितनी ही मेहनत से घिसे उसने मगर
मेरी महबूबा के पैरों से बिवाई न गई

डाक्टर की यही ख़्वाहिश थी कि मर जाऊं मैं
बच गया मैं कि मेरे मुंह में दवाई न गई

मुर्ग़, बिरयानी, मटन मुफ़्त के मिलते ही रहे
मुझसे दो वक़्त की रोटी तो कमाई न गई

मैल की तह तो मेरे जिस्म का इक हिस्सा है
की जतन करके बहुत बार सफ़ाई, न गई

मशवरा लेने चले आते है शागिर्द 'मयंक'
जेल में रहके भी ऊपर की कमाई न गई

सादा जीवन, उच्च विचार
इससे अच्छी मौत है यार

इज़्ज़त, प्यार, शराफ़त, इल्म
धन के आगे सब बेकार

मैं तो नर्क में रह लूंगा
बेगम जाएं स्वर्ग सिधार

औरत को अबला कहना
मर्द के ऊपर अत्याचार

ज्ञान नहीं, पैसे बांटो
गिर तो सकती है सरकार

वह प्रभु कहती है मुझको
मैं सहता हूं उसके वार

वृद्धावस्था आए 'मयंक'
जुड़ जाएंगे रब से तार

ग़रीबी में नगीना देखकर तकलीफ़ होती है
बुज़ुर्गों को हसीना देखकर तकलीफ़ होती है

बुढ़ापे में ये घुटने काम अब आते नहीं मेरे
किसी भी घर में ज़ीना देखकर तकलीफ़ होती है

विधुर होना मेरा अच्छा नहीं लगता है यारों को
मेरा मस्ती में जीना देखकर तकलीफ़ होती है

मुझे मेहनत से चिढ़ है और मैं पैदल भी नहीं चलता
बताऊं क्या, पसीना देखकर तकलीफ़ होती है

कमीना हूं, मुझे अपने सिवा कोई नहीं भाता
कोई दूजा कमीना देखकर तकलीफ़ होती है

नहीं भाते हसीनों के बदन पर ढेर से कपड़े
दिसम्बर का महीना देखकर तकलीफ़ होती है

भला ये शैख़ क्या जानें, 'मयंक' इस शय की लज़्ज़त को
इन्हें मयकश का पीना देखकर तकलीफ़ होती है

कौन कहता है प्यार से होगा
काम अपना उधार से होगा

अच्छे दिन यानी पैदल अभियन्ता
और मज़दूर कार से होगा

रात के दो बजे मैं घर जाऊं
ख़ैरमक़दम कटार से होगा

मूर्ख क्या जानें उनका सामना भी
एक दिन होशियार से होगा

शेर अनजान है सियायत से
कारनामा सियार से होगा

एक दिन तय है आपको धोखा
रिश्तेदारों से, यार से होगा

मुर्ग़, मछली कहां नसीब 'मयंक'
तेरा स्वागत अचार से होगा

सैलाब और कम हुआ दरिया चला गया
यानी चुनाव ख़त्म तो मेला चला गया

चमचों ने मुर्दाबाद के नारे लगाए, जब
नेता विदेशी दौरे पे तन्हा चला गया

एम.पी. एम.एल.ए. हाकिमो हुक्काम दुख में हैं
बारिश हुई कुछ ऐसी कि सूखा चला गया

जनता से वादा करके सुरक्षा हटा तो दी
मंत्री बहुत दुखी है कि पहरा चला गया

मौत एक बार आती है बस इतना सोच कर
बेगम के सामने मैं निहत्था चला गया

पी.एम. जब आए शहर में तब रोशनी हुई
छः माह बाद आख़िर अंधेरा चला गया

यह सच है मैं शराब नहीं पीता हूं 'मयंक'
जब मुफ़्त की मिली तो मैं पीता चला गया

दुआ है, चारा बनें, हम भी घास हो जाएं
ये नेता और वज़ीर आसपास हो जाएं

कहो तो प्यार में हम बदहवास हो जाएं
ये आंखे फोड़े लें और सूरदास हो जाएं

ज़माना उसको भी फ़ैशन का नाम दे देगा
अमीर लोग अगर बेलिबास हो जाएं

बस एक गुंडे की इस शहर में हुकूमत है
मैं चाहता हूं यहां भी पचास हो जाएं

वतन को चूस रहे हैं तमाम खद्दरपोश
जो बस चले तो ये सहरा की प्यास हो जाएं

ज़मीनदार की दो बेटियां कुंआरी हैं
ससुर की इच्छा है दामाद दास हो जाएं

मेरी ख़ुदा से 'मयंक' इतनी ही गुज़ारिश है
तमाम बहुएं इसी वक़्त सास हो जाएं

औरत के मुंह में जीभ नहीं है, मशीन है
संतों के इस विचार पे मुझको यक़ीन है

बच्चे भी पैदा करने में पिछड़े हैं आप लोग
अब तक तो नम्बर एक का हक़दार चीन है

दुल्हन की भैंगी आंखें तो घूंघट में छुप गईं
दूल्हा समझ रहा है कि दुल्हन हसीन है

फ़रमाइशों पे दौड़ लगाता हूं रात दिन
यारो हमारी पीठ पे बेगम की ज़ीन है

मेरी ग़ज़ल की धूम तो दुनिया में है मगर
उस्ताद कह रहे हैं कि कौड़ी की तीन है

माशूक़ा मालदार हुई एक साल में
आशिक़ को देखो, वो तो मलिन दीन हीन है

पैसे बहुत जतन से छुपाएं कहीं 'मयंक'
ससुरालियों की आंख मगर दूरबीन है

जब से हुए हैं दानी चुप
हो गए सारे ज्ञानी चुप

ब्याह किया तो ऐसा क्यों
हर जानी पहचानी चुप

अब कम्बल की वर्षा है
और कबीर की बानी चुप

बिल्ली खम्भा नोचेगी
रानी जब खिसियानी, चुप

मस्ती जागी बूढ़ों में
बच्चों की शैतानी चुप

बचपन टी.वी. में डूबा
अब हैं दादी नानी चुप

आगे कुछ मत बोल 'मयंक'
पुलिस की है निगरानी, चुप

दिखाने के लिए औक़ात जाएं
फटी फतलून में बारात जाएं

विजेता मेज़ से पैसे उठा लें
वो जिनको हो चुकी है मात, जाएं

सभी शहरों में बाइज़्ज़त बसें तो
बताओ किस जगह बदज़ात जाएं

यहां हर आदमी वाक़िफ़ है हमसे
कहां पर मांगने ख़ैरात जाएं

न छत, आंगन न दरवाज़े सलामत
मियां इस घर में बस जिन्नात जाएं

जिसे आता नहीं इनकार करना
उसी के दर पे हम दिन रात जाएं

बसा है शहर में परिवार सारा
'मयंक' अब किस लिए देहात जाएं

बहुत से लोग मेरी शायरी से ख़ौफ़ खाते हैं
उन्हें मैं क्या कहूं जो शुद्ध घी से ख़ौफ़ खाते हैं

कभी सैलाब से पाला पड़ा था गांव वालों का
डरे हैं इस कद्र, सूखी नदी से ख़ौफ़ खाते हैं

उन्हीं को रास आता है सदा बासी बचा भोजन
जिन्हें बीवी का डर है, ताज़गी से ख़ौफ़ खाते हैं

कहा बेगम ने पहले दिन तुम्हारी ज़िन्दगी हूं मैं
हम उस दिन से अभी तक ज़िन्दगी से ख़ौफ़ खाते हैं

अदालत, राजनीतिक दल, पुलिस, अखबार, एन.जी.ओ
हमें सबका पता है, हम सभी से ख़ौफ़ खाते हैं

किसी को घर बुलाकर यह तमाशा कैसे दिखलाएं
जिसे हम प्यार करते हैं उसी से ख़ौफ़ खाते हैं

'मयंक' इस शहर में कुछ आदमी डरते हैं तफ़रीहन
मगर कुछ लोग तो संजीदगी से ख़ौफ़ खाते हैं

ढूंढिए, हैं भक्त भी उनके तमाम
सब नहीं होते हैं ज़ोरू के ग़ुलाम

आदमी की बात मत करना कभी
हम फ़क़त करते हैं कुर्सी को सलाम

क्या कहा, नेता सुरक्षा छोड़ेंगे
मेंढकी को हो गया शायद ज़ुकाम

आई लव यू कह दिया था मैंने कल
उसका उत्तर आ गया है राम राम

सुर्ख़, आंखें बहता पानी, मोतियाबिन्द
कौन पी सकता है उन आंखों के जाम

आप मुझसे खुल के बातें कीजिए
मेरे मुंह पर भी है बीवी की लगाम

एक पत्नी, एक ईश्वर, बस 'मयंक'
हमने काटी ज़िन्दगी श्रद्धा के नाम

तेरे ही जैसा है पागल
तुझसे मगर अच्छा है पागल

सच्चाई की राह पकड़ लूं
तुमने क्या समझा है, पागल

हम संसद होकर लौटे हैं
हमने तो भुगता है पागल

झूठे का मतलब है नेता
दुनिया में सच्चा है पागल

वह पागल होना चाहेगा
जिसने भी देखा है पागल

लोग इस बात पे भी जलते हैं
क्यों हर दम हंसता है पागल

अब 'मयंक' अपने को नापो
तुम सबसे ऊंचा है पागल

शाही मटन की प्लेट है तरकारियों के बीच
इक जंग छिड़ने वाली है बारातियों के बीच

अन्तिम विदाई देते हुए सोच में हैं सब
नेताजी कैसे फंस गए दंगाइयों के बीच

ईमानदार शख़्स मुलाज़िम कचहरी का
कुत्ता घिरा हो जैसे कई हाथियों के बीच

साले, ससुर, ये सालियां इक सास, बीवी, मैं
शक्कर का एक दाना कई चींटियों के बीच

रोटी के टुकड़े छोड़िए, इक कण न पाएगा
बन्दर फंसा हुआ है कई बिल्लियों के बीच

मैं माफ़िया के पांव न चूमूं तो क्या करूं
पत्ते की कुछ बिसात भी है आंधियों के बीच

सच बोलना 'मयंक' मुझे लाया किस जगह
आखिर पड़ा हूं मैं भी हवालातियों के बीच

भयानक हुस्न के चेहरे हुए हैं
लिपिस्टक, पाउडर मंहगे हुए है

चचा तो मर गए होते कभी के
दवा छोड़ी, तभी अच्छे हुए हैं

नहीं चलता है जादू सासुजी का
बहू जी कुंगफू सीखे हुए हैं

पुलिस के सामने कैसा अकड़ना
बहुत से संत भी सीधे हुए हैं

मुसीबत देखकर शादीशुदा की
बहुत से लोग चौकन्ने हुए हैं

नए हैं, टूट ही जाएंगे इक दिन
अभी दामाद जी ऐंठे हुए हैं

पुनर्जन्मों पे है विश्वास मेरा
'मयंक' इंसान भी कुत्ते हुए हैं

चुभेगा तुमको भी पत्नी का प्यार कुछ दिन बाद
पड़ेगी तुमको भी झाड़ू की मार कुछ दिन बाद

किचन, सफ़ाई, पसीना, बचोगी कितने दिन
उजड़ ही जाएगा सोलह सिंगार कुछ दिन बाद

अभी तो संतों को पूजेंगे आप मरने पर
पढ़ेंगे आप भी उनके विचार कुछ दिन बाद

अगर यूं ही ये लिपटती रहेगी फ़ैशन से
बनेगी क़ौम हमारी गंवार कुछ दिन बाद

अशिक्षा और कुपोषण अकेले उसके नहीं
यहां पे यू.पी., उड़ीसा भी हैं बिहार के बाद

प्रथम यही है, ये मक्कार भी, कमीना भी
ये किसने कह दिया इंसान को सियार के बाद

'मयंक' बच गई सत्ता, मगन हैं फिर नेता
विपक्ष मान गया है मगर दुलार के बाद

जैसे तैसे कटता है एक एक दिन अपना
सच कहूं अजूबा है एक एक दिन अपना

रात बीत जाती है ख़्वाब के हिंडोलों पर
युद्ध जैसा लगता है एक-एक दिन अपना

यह तो हम हैं जो इसको पालतू बनाते हैं
वरना इक दरिन्दा है एक-एक दिन अपना

आप थे तो दिन अपने कितने खूबसूरत थे
आज बेसहारा है एक एक दिन अपना

ग़ौर से अगर देखें कांप उठेगी यह दुनिया
कब किसी ने देखा है एक एक दिन अपना

दुश्मनी के ख़तरे से, दोस्ती के नारों से
आंसुओं से भीगा है एक एक दिन अपना

बेपनाह दुख सह कर ज़िन्दा है 'मयंक' अब भी
मौत का तमाशा है एक एक दिन अपना

'मयंक' और उनकी शायरी के बारे में अदीबों की राय

- 'मयंक' ने फ़िरक़ा वाराना हम आहंगी और क़ौमी यकजहती के शऊर को फरोग़ देने में नुमाया ख़िदमत अंजाम दी है। *- असीर बुरहानपुरी*
- के.के. सिंह 'मयंक' एक मुख़लिस इंसान और सच्चे शायर हैं। *- मख़्मूर सईदी*
- 'मयंक' साहब की ग़ज़लें आईनासाज़ी करती हैं और लोगों की बसीरत को तावानी अता करती हैं। *- प्रो. महमूद इलाही*
- 'मयंक' की शायरी ताज़ा हवा के झोंके से कम नहीं। *- मुहाफ़िज़ हैदर*
- क्लासिकी शायरी से शग़फ रखने वालों के लिए दीवान-ए-'मयंक' एक खुशगवार तोहफ़ा है। *- शीन-काफ़-निज़ाम*
- 'मयंक' ने हक़ीक़त को अपनी शायरी का उनवान बनाया है। *- डॉ. महमूदुल हसन उस्मानी*
- मयंक ने दीवान की रिवायत को फिर ज़िंदा करने की कोशिश की है। *- प्रो. अहमर लारी*
- 'मयंक' साहब का इतना शौक़, इतना ज़ौक़, इतनी लगन और उर्दू शायरी इस दरजा मोहब्बत काबिले सताइश भी है और क़ाबिले तारीफ़ भी। *- स्व. कैफ़ी आज़मी*
- कल का क़ैस अगर आज ज़िंदा है तो आज का मयंक कल ज़िंदा रहेगा। *- कालिदास गुप्ता 'रज़ा'*
- के.के. सिंह 'मयंक' मुहब्बतों की ज़बान और ख़ूबियों के बयान का ख़ूबसूरत शायर है। *- बेकल उत्साही*
- 'मयंक' की शायरी कबीर और नज़ीर की ज़मीनों का छूटा हुआ हिस्सा है। *- निदा फाज़ली*
- 'मयंक' साहब मनमोहकता के पैकर खुलूस के सागर और दिल के क़लन्दर हैं। *- वसीम बरेलवी*
- 'मयंक' अपनी तैयारी कला और अपने अन्दाज़े फ़िक्र की बदौलत हिन्दोस्तान के गोशे-गोशे में जाने वाला नाम है। *- बशीर बद्र*
- 'मयंक' साहब का दीवान वाक़ई अदब में एक मख़सूस पहचान बनाएगा। *- गणेश बिहारी 'तर्ज़'*
- मयंक साहब को ग़ज़ल के असलूब और आहंग की बहुत अच्छी वाक़फीयत है। *- बी.ए. बहादुर 'महशर' बरेलवी*
- उर्दू की नातिया शायरी की तारीख़ में 'मयंक' का ऊंचा मक़ाम होगा। *- सुलेमान अतहर जावेद*

- क्लासिकी शायरी की सभी ख़ूबियां 'मयंक' साहब के क़लाम में पाई जाती हैं।
- एहतेशाम अख़्तर

- 'मयंक' मुख़्तलिफ़ रंग-ओ-आहंग का शायर। *- मलका नसीम*

- कम लफ़्ज़ों में बहुत कहना मयंक के फ़न की पहचान है। *- मंज़ूर हाशमी*

- मज़हबे इंसानियत का अलम बरदार सेहतमंत कदरों का मुहाफिज़ मुबालग़ा आराई से मुस्तसना शायर मयंक। *- डॉ. निगार अज़ीम*

- उर्दू शायरी के सेकूलर किरदार की वकालत करने वाले शुअरा की फ़ेहरिस्त का एक नाम के.के. सिंह 'मयंक'। *- डॉ. जावेद नसीमी*

- 'मयंक' एक दर्दमंद और हस्सास शायराना ज़हनो दिल के मालिक हैं।
- डॉ. शाहिद हुसेन

- 'मयंक' साहब ने शायरी में तसव्वुफ़ के पहलू को बखूबी उजागर किया है।
- बिस्मिल नक़्शबन्दी

- 'मयंक' साहब की शायरी में हुब्बुलवतनी कूट-कूट कर भरी हुई है।
- दर्द होशियार पुरी

- 'मयंक' की शायरी राइज ख़ानाबंदियों में तक़्सीम नहीं होती।
- प्रो. जगन्नाथ आज़ाद

- 'मयंक' साहब दरिया-ए-फ़िक्र में बहते हैं, बड़े पते की बात कहते हैं।
- प्रो. ज़फर अहमद निज़ामी

- दीवान-ए-मयंक में मयंक साहब की आलिमाना सलाहियतों का तफ़सीली तआरुफ़ होता है। *- डॉ. राहत इन्दौरी*

- ख़ुशदिल, ख़ुशफिक्र, ख़ुशआहंग, ख़ुशआवाज़, के.के. सिंह 'मयंक'।
- मुमताज़ राशिद

- 'मयंक' साहब बड़ी शानो-शौकत के साथ मुशायरे में आते हैं और छा जाते हैं।
- प्रो. क़ासिम इमाम

- 'मयंक' साहब की शायरी की सबसे ज़ियादा ख़ास बात तो यह है कि उनके यहाँ बहुत ही आसान, सुबुक और शीरीं अलफ़ाज़ का इस्तेमाल हुआ जिसे आसानी के साथ सब लोग समझ सकते हैं। *- प्रो. मलिक ज़ादा 'मंज़ूर अहमद*

- 'मयंक' साहब के शेरों में उर्दू शयरी के रंगे-तग़ज़्ज़ुल (एक आवश्यक रूमानीपन) और कैफ़ियत (भावमयता) के जगह-जगह दर्शन होते हैं। *- 'ज़हीर' क़ुरेशी*

- 'मयंक' जी ने अपनी ग़ज़लों में अछूते प्रयोग किए हैं। एकदम नये टोटके का प्रयोग... अक्सर लगा कि मैं ऐसा क्यों न कह पाया। *- अशोक 'अंजुम'*

- 'मयंक' जी की शायरी में हर क़दम पर ज़िन्दगी की पदचाप सुनाई देती है। उनके अशआर जहाँ वर्तमान का आईना हैं, वहीं भविष्य की धरोहर भी।
- डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'